ध्वंस और सृजन की सुस्पष्ट संभावना

-पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

ध्वंस और सृजन की सुस्पष्ट संभावना

▼

लेखक :
पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

▼

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा
फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९
मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९
फैक्स नं०- २५३०२००

पुनरावृत्ति सन् २०१४ मूल्य : १०.०० रुपये

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३

"आज दुनियाँ की हालत बड़ी डाँवाडोल हो रही है। चारों तरफ फैली घोर कलह और अशांति के वातावरण से यही प्रतीत होता है कि एक नया युग आने ही वाला है। लोगों में स्वार्थपरता और उसके फलस्वरूप द्वेष, शत्रुता के भाव इतने अधिक व्याप्त हो गए हैं, कि समाधान की आशा बिल्कुल धूमिल पड़ गई है। इस 'कलह युग' का अंतिम परिणाम क्या होगा, इस संबंध में बड़ी भयंकर संभावनाएँ प्रकट की जा रही हैं, साथ ही लोकोत्तर आत्माएँ उनसे सुरक्षा के संबंध में कुछ संकेत कर रही हैं। हम सबको समय रहते उनसे लाभ उठाना चाहिए।"

मुद्रक :
युग निर्माण योजना प्रेस,
गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३

प्रसिद्ध ज्योतिर्विदों की दृष्टि में युग-संधि

युग-संधि की अवधि में कितनी ही उथल-पुथल होने की संभावना है। इस संदर्भ में प्रख्यात ज्योतिषियों ने कुछ महत्त्वपूर्ण अभिमत व्यक्त किए हैं। इनमें से कई समयानुसार सही सिद्ध हो चुके। कुछ ऐसे हैं जिनका संबंध भविष्य से है। कुछ अंतर्राष्ट्रीय परिस्थिति से संबंध रखते हैं कुछ भारत से, समय आने पर यह विदित होगा कि भूतकाल की तरह उनके भविष्य कथन भी सही सिद्ध होते हैं या नहीं।

इन कथनों में से जिनका भारत से सीधा संबंध है, उन्हें देखते हुए इस नतीजे पर पहुँचना पड़ता है कि अगले दिन भारी कठिनाइयों के हैं। इनसे भारत को भी बहुत कुछ सहना पड़ेगा साथ ही एक तथ्य यह भी उभरकर आता है कि समस्त विश्व को नया प्रकाश देने और सृजनात्मक सत्प्रवृत्तियों को अग्रगामी बनाने में भारत की भूमिका असाधारण रहेगी। भूत काल में भी विश्व शांति के लिए, मानवी प्रगति एवं समृद्धि के लिए भारत ने बहुत कुछ किया है। अब फिर उसी की पुनरावृत्ति होने जा रही है। यहाँ की ऋषि कल्प आत्माएँ प्राचीन काल की तरह लोक कल्याण के लिए बहुत कुछ करने की तैयारी में जुटी हुई हैं। समय बताएगा कि इन प्रयासों के फलस्वरूप सृजन को कितना बल मिला और संकटों को टालने में इस तत्परता ने कितना चमत्कार उत्पन्न किया ? इस संदर्भ में प्रख्यात ज्योतिर्विदों के कुछ कथन नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

सितंबर १९७२ में दुनियाँ के प्रमुख ज्योतिषियों का एक सम्मेलन हुआ, इस सम्मेलन में ऐसे ज्योतिषी सम्मिलित हुए थे, जिनकी ८० प्रतिशत से भी अधिक भविष्यवाणियाँ सही निकलती रही हैं। कोरिया के सियोल नगर में संपन्न हुए इस सम्मेलन में १०४ भविष्यवक्ता सम्मिलित हुए थे, सबने आम सहमति से, अपने ज्योतिष ज्ञान के अनुसार जो भविष्य कथन कहे, उनमें से कुछ इस प्रकार हैं कि

सन १९८४ के आस-पास अमेरिका और रूस में युद्ध तो होगा, किंतु सन १९८४ के पूर्व इस बात की कोई संभावना नहीं है। यह युद्ध 'विश्वयुद्ध' हो सकता है।

"आज जो राष्ट्र महाशक्तियों द्वारा विभक्त कर लिए गए हैं, जैसे जर्मनी, कोरिया और वियतनाम, वह भविष्य में पुनः संयुक्त हो जाएँगे, उनकी सरकारें दो न होकर एक होंगी, राष्ट्रवादी और बाह्य शक्तियों के दबाव में आए बिना, काम करने वाली होंगी।"

"व्यापार, धन्य-धान्य, कृषि, गौ, विद्या, विज्ञान तथा तकनीकी क्षेत्र का एशियाई प्रभुत्व भारतवर्ष में आ सकता है।'

"चीन काफी समय तक जोड़-तोड़ की राजनीति में कामयाब रहेगा और प्रबल शत्रुओं को भी धोखा देने तथा मित्रता का नाटक रचने में वह सफल होगा, किंतु उसकी पोलें जल्दी ही खुलेंगी। अपने आंतरिक विग्रह के कारण भी वह विनाश के गर्त में जा सकता है। विश्व में कई राजनेताओं की हत्याओं के योग है।

इन भविष्यवाणियों में अधिकांश का समय १९८० के बाद का बताया गया है। इस सम्मेलन के अध्यक्ष, जो स्वयं भी कोरिया के विश्व प्रसिद्ध, दैवज्ञ हैं, श्री हर्सारों-असानों ने उस सम्मिलित विज्ञप्ति को प्रसारित करते हुए लिखा है कि इसमें केवल उन्हीं भविष्य-वक्ताओं को सम्मिलित किया गया है, जिनकी भविष्यवाणियाँ ८० प्रतिशत से भी अधिक सत्य हुई हैं। इस सम्मेलन के समाचार और यह भविष्यवाणियाँ दुनियाँ के प्रायः सभी अखबारों में विवरण सहित प्रकाशित हुई। भारत में भी यह विवरण 'इंडियन एक्सप्रेस' दैनिक के १२ सितंबर में सार रूप छपा था। इसमें उपरोक्त घटना क्रमों की चर्चा के अतिरिक्त विश्वव्यापी बौद्धिक परिवर्तनों का भी संकेत है। घोषणा में कहा गया है कि, अगले दिनों एशिया में भारी उथल-पुथल होगी। यह उथल-पुथल एक ओर विचारक्रांति के रूप में परिलक्षित होगी तो दूसरी तरफ एक बार भयंकर अकाल पड़ेगा। तीन भयंकर भूकंप आएँगे।

विचारक्रांति का असर सारी दुनियाँ पर पड़ेगा। सन २००० से पूर्व ही बौद्धिक क्रांति की यह लहर न केवल दक्षिणपंथी वरन् वामपंथी कम्युनिस्ट देशों में भी फैल जाएगी। क्रांति का स्वरूप

आध्यात्मिक धार्मिक विचार होगा। मत-मतांतरों के, वर्ण-संप्रदाय के, भाषा-भेष के भेद मिट जाएँगे और लोगों में धार्मिक समभाव तथा भाई चारे की भावना का व्यापक विस्तार होगा।

परिवर्तन जब एक सुनिश्चित विधान के अनुसार होगा तो उसका सूत्रपात और सूत्र-संचालन कौन करेगा, इस बात पर भी विश्व भविष्यवक्ताओं में विचार-विमर्श हुआ। दृष्टा इस मामले में एक मत थे कि "एशिया के किसी देश में जन्मा एक महान संत विश्व में भारी परिवर्तन लाने के लिए कार्यरत है। इस शताब्दी के अंत तक इस संत का प्रयास इतना सफल होगा कि उसकी गरिमा का मूल्यांकन करने के लिए उपयुक्त कल्पना नहीं की जा सकती।

प्रोफेसर कीरो की भविष्यवाणियों ने अनेक बार लोगों को चौंकाया। व्यक्तियों संप्रदायों और राष्ट्रों के संबंध में उन्होंने ऐसी-ऐसी बातें घोषित कीं, जो उस समय एकदम असंगत लगती थी, पर भविष्य के घटना चक्र ने उन्हें सही सिद्ध कर दिया। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका की लड़ाई, महान विक्टोरिया की मृत्यु एडवर्ड सप्तम की मृत्यु का ठीक-ठीक माह और दिन घोषित कर लोगों के कौतूहल को चरम बिंदु तक पहुँचा दिया था। इटली के शासक हर्बर्ट की हत्या, रूस के जार का पतन और उसके परिवार के प्रत्येक व्यक्ति का कत्ल होगा, जर्मन के प्रथम युद्ध का ठीक समय आदि सालों पूर्व बतला दिया था। उस समय लोगों ने भले ही शक किया, पर जब वे घटनाएँ तथ्य बनकर, सामने आईं, तब प्रो० कीरो की अतींद्रिय क्षमता का लोहा मानना पड़ा। लार्ड किचनर से संबंधित उनकी भविष्यवाणी को भी बहुत महत्त्व दिया गया।

प्रोफेसर कीरो ने भविष्यवाणी की थी—'योरोप की ईसाई जातियाँ एक बार फिर से यहूदियों को पैलेस्टाईन में बसाएगी, जिनके कारण अरब राष्ट्र और उनके इस्लामी मित्र भड़क उठेंगे, वे बार-बार इंग्लैंड, अमेरिका के विरुद्ध उत्तेजक नारे बुलंद करेंगे, यहूदियों से उनकी टक्कर भी होगी, इन सबके बावजूद यहूदियों की शक्ति बढ़ेगी। कम संख्या में होते हुए भी ईश्वरीय चमत्कार के सहारे यहूदी अरबों को पीटेंगे और उनका बहुत-सा प्रदेश अपने कब्जे में कर लेंगे। सन १९७० के बाद कभी भी एक बार बहुत ही भयानक टक्कर

होगी, जिसमें अरब राष्ट्र बुरी तरह तहस-नहस होंगे। यह विनाश लीला होने के बाद एक नई सनातन सभ्यता का अभ्युदय और सारे विश्व में प्रसार होगा। यह सन २००० के पूर्व ही होगा।

यह भविष्यवाणी हुई तब इसरायल कल्पना में भी नहीं आया था, कुछ ही दिनों में दुनियाँ भर के यहूदी फिर से पैलेस्टाइन में आए। सचमुच ईसाईयों ने उन्हें मदद दी और इस तरह एक छोटा-सा, किंतु बाघ और बाज की तरह इसरायल एक सशक्त राष्ट्र के रूप में उठ खड़ा हुआ और एक ही धमाके में उसने जहाँ जोर्डन की कमर तोड़ दी, वहाँ मिस्र का पूरा सिनाई प्रांत ही हड़प लिया। प्रो० कीरो ने कहा था—"अरबों की नील नदी यहूदियों का आदाब बजाएगी" सो भी सच हुआ और अब उस भविष्यवाणी के उत्तरार्ध की प्रतीक्षा की जा रही है।

प्रो० कीरो की भविष्यवाणियों की सत्यता का अनुमान किसी को करना हो तो वह सन १९४३ की अखंड ज्योति का जनवरी अंक उठाकर देखें, जिसमें पृष्ठ २३ पर छपा है "इंग्लैंड भारत को स्वतंत्र कर देगा पर मजहबी फिसाद के कारण भारत तबाह हो जाएगा यहाँ तक कि हिंदू, बौद्ध और मुसलमानों में बराबर-बराबर विभक्त हो जाएगा।"

जिन दिनों यह भविष्यवाणी प्रकाशित हुई थी, उन दिनों ब्रिटिश दमन चक्र अपने पूरे जोर पर था कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था कि भारत स्वतंत्र होगा, पर प्रो० कीरो का कथन था, "भारत वर्ष का सूर्य ग्रह बलवान है और कुंभ राशि पर है अतः उसका अभ्युदय संसार की कोई ताकत नहीं रोक सकती।" यह कथन सच ही होकर रहा, पर दूसरी भविष्यवाणी जिसमें इस देश के बँट जाने की बात थी उस पर तो किसी का कतई विश्वास नहीं था फिर भी सारी दुनियाँ ने देखा कि भारत के ही बहुत-से बौद्ध, मतावलंबी राज्य अलग हो गए, पाकिस्तान बना ओर आज तक वह भारत के लिए सिर दर्द पैदा कर रहा है।

इसके बाद प्रो० कीरो ने भारतवर्ष के संबंध में कहा है, "विशुद्ध धर्मावलंबी नीति के एक सशक्त और प्रखर व्यक्ति के भारत वर्ष में जन्म लेने का योग है। उसकी आध्यात्मिक शक्ति दुनियाँ भर

की तमाम भौतिक शक्तियों से समर्थ होगी। वृहस्पति का योग होने के कारण ज्ञान क्रांति की संभावना है, जिसका असर दुनियाँ में पड़े बिना नहीं रहेगा।"

लंका के प्रसिद्ध ज्योतिषी श्री नटराजन अपनी सफल भविष्य-वाणियों के लिए प्रख्यात हैं। एशिया तथा विश्व के अन्य देशों में भी उनकी काफी ख्याति हुई है। विश्व के घटना-चक्रों के बारे में उनकी भविष्यवाणियाँ सही ही निकलती हैं। भावी विश्व के बारे में उनकी कुछ विशेष भविष्यवाणियाँ इस प्रकार हैं।

१. तिब्बत सन १९८२ में स्वतंत्र हो जाएगा २. अगले भारत-पाक युद्ध में या उसके पूर्व पाकिस्तान का एक हिस्सा पृथक बिलोचिस्तान के रूप में बदल जाएगा। ३. भारत का गौरव निरंतर बढ़ता ही जाएगा। ४. जापान निरंतर औद्योगिक प्रगति करता रहेगा। ५. १९८० में भारत का अपने एक ऐसे पड़ौसी देश से एक छोटे भूखंड को लेकर विवाद बढ़ेगा, जिससे अभी उसके मधुर रिश्ते हैं। पर यह विवाद युद्ध का रूप लेने के पहले ही मामला सुलझ जाएगा। ६. सन १९८७ में एक भयंकर तूफान आएगा, जिसमें असंख्य प्राणियों का संहार हो जाएगा।

राजस्थान के सुप्रसिद्ध ज्योतिषी डा० नारायण दत्त श्री माली की ज्योतिष से संबंधित अनेक पुस्तकें प्रसिद्ध हैं। अमेरिका के एक विश्वविद्यालय ने उसकी वार्ता 'शेष शताब्दी का विश्व टेप की है। इसमें से कुछ प्रमुख भविष्यवाणियाँ ये हैं—

१. अमेरिका १९८० में चंद्रमा के अतिरिक्त अन्य ग्रहों से भी संपर्क स्थापित कर सकने में समर्थ होगा। २. १९८१ में पाकिस्तान का अस्तित्व नगण्य हो जाएगा। ३. १९८२ तक भारत भी अपना एक नागरिक अंतरिक्ष में भेज सकेगा। ४. १९८३ में एक व्यापक युद्ध छिड़ेगा, जिसमें विश्व के विविध देश उलझेंगे। यह युद्ध प्रायः १६ वर्षों तक चलेगा। ५. २४ जुलाई १९८४ विश्व इतिहास में 'अशुभ दिन' के रूप में अंकित होगा, क्योंकि उस दिन विश्व में बहुत अधिक प्राणी मौत के मुँह में समा जाएँगे। ६. १९८५ से १९८८ तक का समय जापान के लिए विशेष कष्टकर रहेगा। ७. चीन महाशक्ति बनकर उभरेगा। उसके विरुद्ध अमेरिका तथा रूस एक होंगे। ८. १९८७ में

एक अति भयंकर तूफान आएगा, जिसमें करोड़ों लोग मारे जाएँगे। ६. १९९१ में ऐसा भयंकर अकाल पड़ेगा कि लोग पेड़ों की जड़ें खाकर जीवित रहने का प्रयास करेंगे। १०. १९९१ में फरवरी महीने में पहली बार अंतरिक्ष के किसी ग्रह का प्राणी इस धरती पर कदम रखेगा। ११. भारत निरंतर प्रगति करेगा तथा विश्व की हस्तियों में से एक होगा।

बरार के विद्वान ज्योतिषी श्री गोपीनाथ शास्त्री चुलैट ने एक रात स्वप्न देखा कि 'नये युग का आविर्भाव सन्निकट है।' उठकर उन्होंने उस स्वप्न समय की कुंडली बनाई।

इस लग्न कुंडली को बनाने और अध्ययन के बाद इन निष्कर्षों पर पहुँचने के बाद शास्त्री जी ने 'युग परिवर्तन' नामक एक पुस्तक लिखी, जो अकोला-महाराष्ट्र से प्रकाशित हुई। इस पुस्तक में उन्होंने ज्योतिष गणना के आधार पर बताया है कि इन्हीं दिनों युग-परिवर्तन प्रारंभ हो जाता है और इस समय युग संधि चल रही है, जिसमें पहले अज्ञानांधकार का अंत और नवयुग की अरुणिमा निरंतर बढ़ती ही जाएगी। यह समय एक ओर जहाँ भारत वर्ष के लिए तीव्र हलचलों उथल-पुथल और परिवर्तनों का है, वहीं सारे विश्व के लिए भी कम कष्टप्रद नहीं है।

शास्त्री जी द्वारा समय-समय पर की गई भविष्यवाणियाँ सही सिद्ध होती रही है। इस आधार पर उनका युग-परिवर्तन कथन भी विश्वसनीय ही माना जा सकता है।

सन १९४५ और सन १९५० के मध्य भारतवर्ष के स्वतंत्र होने की भविष्यवाणी की थी; वह सच हुई, उन्होंने सन १९३८ में ही महात्मागाँधी की मृत्यु का ठीक-ठीक समय बता दिया था, यह भी सही सिद्ध हुआ। शास्त्री जी ने भविष्यवाणी की थी सन १९७० के आस-पास अमेरिका का कोई मनुष्य चंद्रमा की परिक्रमा करेगा। 'कलिवर्ज्य प्रकरण में पृथ्वी का प्रदक्षिणा नहीं करनी चाहिए, इसका खंडन करते हुए शास्त्री जी ने लिखा था कि 'भारतीय विमान आदि काल से ही पृथ्वी और अन्य ग्रहों की प्रदक्षिणा करते हुए उड़ते तथा वहाँ की यात्रा करते रहते थे। भविष्य में यह स्थिति भी देखने में आएगी, जब सन १९७० तक अमेरिका निवासी चंद्रमा पर उतर

जाएँगे। इसलिए हम भारतीयों को भी प्रदक्षिणा (अंतरिक्ष) विज्ञान की शोध करनी चाहिए, शास्त्री जी की अनेक भविष्यवाणियों में उत्तरी सीमांत से आक्रमण (चीन के हमले) आदि की भविष्यवाणी भी सही सिद्ध हो चुकी है। ऐसी दशा में उनका युग-परिवर्तन का वक्तव्य विश्वस्त समझा जा सकता है।

अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त भविष्य वक्ता और एस्ट्रालाजिकल मैंगजीन के संपादक वी० वी० रमन ने कहा है कि सन् १९८० का आरंभ मंगल राहू की युति से होता है। बृहस्पति, चंद्रमा और सूर्य आदि ग्रह-स्थितियों के प्रमाण स्वरूप विश्व में ऐसी विकट परिस्थितियाँ उत्पन्न होंगी, जो अभी तक इतिहास के किसी भी काल में विनिर्मित नहीं हुई। वी० वी० रमन के अनुसार सारे विश्व की महाशक्तियाँ इन्हीं दिनों एक-दूसरे से तहस-नहस करने के लिए आस्तीनें चढ़ाने लगेंगी। राजनीति में अपना वर्चस्व रखने वाले नेतागण सत्ता-लोलुप और अदूरदर्शी होने के कारण आसन्न समस्याओं पर नियंत्रण रख पाने में असमर्थ होंगे।

'ज्योतिष बाध' मासिक पत्रिका के जनवरी अंक के "भविष्य में क्या होगा ?" शीर्षक से एक लेख प्रकाशित हुआ है। इस लेख में कहा गया है कि 'शनि एक राशि पर लगभग ढाई वर्ष तक रहता है। अतएव प्रत्येक राशि पर वह १२ × २।। अर्थात तीस वर्ष पश्चात आता है। कर्क, सिंह व कन्या राशि के शनि भयंकर परिवर्तन प्रस्तुत करते हैं। सन १८७५, १९१७, १९४५ और १९७७ से अब तक के तीन चार वर्षों की अवधि में घटी घटनाएँ स्पष्ट हैं। सन् १९८२ में शनि के चित्तार्द्ध कन्या राशि पर रहने तक भारत ही नहीं, अपितु विश्व में भयंकर परिवर्तन होते रहे हैं। अनिश्चितता बनी रहेगी। भारत में अशांति तथा उपद्रवों की भी अभिवृद्धि होगी।

प्रस्तुत युग संधि के संबंध में भविष्य वक्ता या ज्योतिषी सुखद संभावनाओं के संबंध में भी आश्वस्त हैं। लेकिन इनके पहले विनाश अवश्यंभावी है। संसार की तेजी से बदलती हुई परिस्थितियाँ यह बताती हैं कि उपरोक्त भविष्य कथन में जिस महासंग्राम और महाविनाश की संभावना पर जोर दिया गया है, वह अनुमानतः समीप ही आ गया है। इन संकेतों को समझा जाना चाहिए।

❐ ❐

दिव्य दृष्टाओं के भविष्य कथन

ज्योतिर्विज्ञान अंतर्ग्रही हलचलों और प्रतिक्रियाओं की सूक्ष्म जानकारी पर आधारित है। इसलिए उसकी गणना भौतिक विज्ञान में की जाती है। प्रतिक्रियाओं का अनुमान लगाते हुए जो भविष्य कथन किया जाता है उसका आधार भी यही है।

अतींद्रिय क्षमता का क्षेत्र इससे भिन्न है। उसमें ग्रह-गणित की आवश्यकता पड़ती है। अंर्तदृष्टि एक दिव्य सामर्थ्य है, जिसके सहारे परोक्ष के अनेक रहस्यमय परतों पर पड़े हुए पर्दे को हटाया जा सकता है और वह जाना जा सकता है, जो सामान्यतया संभव नहीं होता।

क्रिया की प्रतिक्रिया, कार्य का प्रतिफल सिद्धांत भी तभी भावी संभावनाओं का अनुमान लगा सकता है, जब घटनाक्रम सामने हो, किंतु अदृश्य दर्शन की दिव्य दृष्टि अंतरिक्ष की हाँडी में पक रही खिचड़ी की गंध लेकर यह बता सकती है कि उसमें क्या उबल रहा है और पककर किस रूप में क्या आने वाला है ?

प्रयत्न करने पर यह शक्ति योग-साधना द्वारा कोई भी साधक अपने में विकसित कर सकता है। साधना से सिद्धि का सिद्धांत सर्वमान्य है, किंतु कई बार ऐसा भी होता है कि पूर्व संचित-संस्कारों के कारण यह दिव्य क्षमता अनायास ही जग पड़ती है। बिना साधना के 'सिद्ध पुरुष' स्तर के मनुष्य भी जब-तब पाए जाते हैं और उनमें शाप वरदान जैसी सामर्थ्य तो नहीं होती, पर अदृश्य दर्शन की दृष्टि से उनकी विशेषता आश्चर्यजनक देखी गई है।

पिछले दिनों संसार में ऐसे अदृश्यदर्शी पाए गए हैं, जिन्हें योगी ऋषि तो नहीं कह सकते हैं, पर भविष्य दर्शन की दृष्टि से उनकी विशिष्टता सर्वमान्य रही है। उन्हें यह शक्ति कैसे मिली इसका उत्तर 'अनायास' के अतिरिक्त और कोई दिया नहीं जा सकता ? इतने पर

भी यह कसौटी पर सही पाया गया कि उनके कथन अधिकांश में सच निकले। यों जब-तब उनमें गलतियाँ भी निकली हैं।

अगली पंक्तियों में जिन अदृश्य शक्तियों के भविष्य कथनों की चर्चा की गई है, वे सभी अंतराष्ट्रीय ख्याति के हैं। यह ख्याति उन्हें किसी विज्ञापनबाजी से नहीं वरन् कथनों में सचाई मिलने के आधार पर ही मिली है।

युगसंधि के मध्य क्या कुछ घटित होने वाला है। इस संदर्भ में इन प्रख्यात दिव्यदर्शियों के अभिमत पर दृष्टिपात करने से ही इन निष्कर्षों पर पहुँचना पड़ता है। (१) अगले बीस वर्ष मनुष्य जाति के सामने असाधारण कठिनाइयों से भरे होने की संभावना है। (२) वह समय दूर नहीं जब भविष्य की परिस्थितियाँ प्रत्यक्ष होंगी। लोग वर्तमान रीति-नीति बदल देंगे। व्यक्तिगत दृष्टिकोण एवं समाज-व्यवस्था का नया निर्धारण करेंगे। (२) युग-परिवर्तन के इन बीस वर्षों में भारत की भूमिका महान होगी। उसे अन्यत्र की अपेक्षा कम विपत्तियों का सामना करना पड़ेगा। साथ ही उसकी अध्यात्म भूमिका विनाश को हलका करके और विकास को निकट लाने के लिए प्रबल प्रयास करेगी तथा सफल भी होगी।

अदृश्य दर्शियों ने विभिन्न प्रसंगों के अन्यान्य विचार भी व्यक्त किए हैं। उनकी भविष्यवाणियों एवं दिव्यशक्तियों पर प्रकाश डालने वाली कितनी ही पुस्तकें छपी हैं। उनमें से उतना ही संकलन किया गया है, जिसे सार कहा जा सकता और जो युगसंधि में होने वाली परिवर्तन-प्रक्रिया से संबंधित है। चुने हुए भविष्यदर्शियों में से जिन सात के कथन संकलन किए गए हैं, वे यह हैं—(१) जीन डिक्सन (२) जूलवर्न (३) प्रो० हरार (४) पीटर हर कौस (५) नोस्ट्राडेमस (६) जान सेवेज (७) एंडरसन।

१. जीन डिक्सन

जीन डिक्सन का नाम आज विश्वविख्यात है। यह अमरीकी महिला अपनी अचूक भविष्यवाणियों के लिए जानी जाती है। जीन जब ६ साल की बच्ची थी, तब एक दिन उसकी माँ ने यों ही, बात-बात में बच्चों से पूछा कि तुम्हारे पिता तुम लोगों के लिए क्या लाएँगे ? जीन ने दो पल रुककर जवाब दिया वे एक सुंदर-सा

सफेद कुत्ता मेरे लिए लाएँगे। उस समय पिता सवा हजार मील दूर थे। दूसरे सभी बच्चे जीन की बात पर हँसने लगे।

पर उस समय पूरा घर आश्चर्य से भर उठा, जब पिता घर लौटकर आए तो सचमुच एक सफेद कुत्ता साथ लाए।

जीन डिक्सन की यह अंतर्दृष्टि क्षमता बढ़ती ही रही और वे जैसे-जैसे बड़ी होती गईं, वैसे ही वैसे प्रसिद्ध भी होती गईं।

सर्वप्रथम उनकी चर्चा बड़े पैमाने पर तब चल पड़ी, जब उन्होंने खुद सन १९४४ मे तत्कालीन अमरीकी राष्ट्रपति के देहावसान की तिथि उनके दफ्तर जाकर दी। दूसरे महायुद्ध के दिन थे—रूजवेल्ट धार्मिक प्रकृति के व्यक्ति थे। इसलिए जब विनम्र स्वरों में जीन ने यह बताया कि मैं एक साधारण गृहस्थ नारी हूँ, पर ईश्वर ने मुझे जो अंर्तदृष्टि दी है, वह देश के किसी काम आए यही चाहकर मैं कभी-कभी उसमें कौंधी हुई बातें बताती रहती हूँ।" तो रूजवेल्ट ने बड़ी उत्सुकता से और आत्मीयता से उन्हें अपनी बात कहने का आग्रह किया। जीन डिक्सन ने कुछ हिचकिचाहट के साथ कहा कि "मैंने आपसे ही संबंधित एक घटना देखी है।" जीन को रुकते देख राष्ट्रपति रूजवेल्ट भाँप गए और बोले—आप संकोच क्यों कर रही हैं ? संभव है आपने मेरी मृत्यु से संबंधित घटना देखी हो तो आप अवश्य बताने की कृपा करें, ताकि मैं अपने शेष कर्त्तव्य को भली भाँति निभा सकूँ।"

जीन डिक्सन ने बहुत हिचकिचाते हुए बताया—आगामी वर्ष के मध्य में आपकी मृत्यु अवश्यंभावी है।

जीन डिक्सन का आभास पूर्णतः सही था। १९४५ के मध्य में रूजवेल्ट का अंत हो गया और साथ ही जीन डिक्सन की राष्ट्रव्यापी प्रसिद्धि के क्रम का भी आरंभ हो गया।

कुछ समय बाद राष्ट्रपति ट्रूमैन ने एक क्लब के समारोह में श्रीमती जीन डिक्सन से यों ही पूछा—क्या आप मेरे भविष्य के बारे में कुछ बता सकती हैं ? जीन डिक्सन बोलीं—आप शीघ्र ही राष्ट्रपति बनने वाले हैं, थोड़े ही समय बाद ट्रूमैन सचमुच राष्ट्रपति बन गए। इस घटना के बाद जब स्वयं ट्रूमैन ने जीन डिक्सन की चर्चा की तो सारा अमरीका उन्हें जानने लगा।

भारत के विभाजन की भविष्यवाणी भी श्रीमती जीन डिक्सन ने काफी समय पहले कर दी थी।

३० जनवरी १९४८ को जीन डिक्सन कुछ लोगों से बात कर रही थीं, बीच में सहसा वे रुकीं और बोलीं—अब बात आगे नहीं हो सकेगी। मुझे लग रहा है कि गाँधीजी की अभी-अभी हत्या कर दी गई है। हमें कुछ समय शांत रहना चाहिए। वस्तुतः ठीक उसी समय गाँधीजी पर हत्यारे ने गोली चलाई थी। कुछ घंटों में यह खबर रेडियो पर सारे संसार में सुनाई जाने लगी।

एक अप्रत्याशित भविष्यवाणी जीन ने चर्चिल के बारे में की। कुछ प्रसिद्ध पत्रकारों ने उनसे चर्चिल के बारे में भविष्यवाणी का आग्रह किया। जीन ने तत्काल कहा—युद्ध के बाद वे प्रधानमंत्री नहीं रहेंगे। हाँ एक अंतराल के बाद वे फिर प्रधानमंत्री बनेंगे। उन दिनों चर्चिल लोकप्रियता के शिखर पर थे। युद्ध का संचालन भी उन्होंने अति उत्तम रीति से किया था अतः उनके हटाए जाने की संभावना नहीं थी, पर युद्ध से कुछ समय बाद सचमुच ही चर्चिल को पद त्याग करना पड़ा। दूसरे व्यक्ति प्रधानमंत्री बने उनके बाद श्री चर्चिल फिर प्रधानमंत्री बने।

रूस में स्टालिन के बाद मालेन्कोव के प्रधानमंत्री और दो वर्ष के बाद ही उनका स्थान किसी मोटे-तगड़े सैन्याधिकारी द्वारा लिए जाने की भविष्यवाणी भी जीन डिक्सन ने की थी, जो अक्षरशः सही निकली।

अब तक हजारों दुर्घटनाओं को उन्होंने टाला है, खोए हुए का अता-पता बताया है, हत्या और आत्महत्या का रहस्य अनावृत किया हैं, तथा अन्य तरह से मदद की है। उनके घर में जो अतिथेय-कक्ष है वहाँ न केवल उच्च अधिकारी, राजनेता, व्यवसायी आए दिन बैठे देखे जाते हैं, अपितु साधारण किसान और श्रमिक भी वहाँ पाए जाते हैं तथा श्रीमती डिक्सन सभी को यथोचित समय देती हैं।

जान केनेडी की राष्ट्रपति के रूप में जीत तथा चार साल के भीतर ही उनकी हत्या की भविष्यवाणी श्रीमती जीन डिक्सन ने सन १९५६ में ही कर दी थी। सन १९६० के चुनाव में सचमुच केनेडी जीते। बाद में एक संवाददाता ने फिर पूछा कि केनेडी के बारे में

आपकी दूसरी भविष्यवाणी का क्या होगा जीन डिक्सन ने कहा—मुझे स्पष्ट दीखा है कि नवंबर १९६३ के तीसरे हफ्ते में राष्ट्रपति केनेडी की हत्या कर दी जाएगी। हत्यारे के नाम का पहला अक्षर ओ तथा दूसरा अक्षर डी होगा। १७ नवंबर को श्रीमती डिक्सन ने स्वयं व्हाइट हाउस को फोन किया और सुरक्षा अधिकारी को बताया कि राष्ट्रपति की इसी सप्ताह हत्या हो सकती है, पर अफसरों ने इसे असंभव कहकर हँसकर टाल दिया। श्रीमती डिक्सन ने अपनी एक मित्र से दुःखी स्वर में कहा कि ये अधिकारी पागल हो गए हैं मेरी बात नहीं मान रहे। लगता है कि होनी होकर रहेगी। आखिर १९६३ में ही २२ नवंबर को केनेडी की हत्या ओसवाल्ड ने कर दी और जीन डिक्सन तथा उनकी भविष्यवाणी की गूँज सारे संसार में फैल गई।

श्रीमती डिक्सन ने खुश्चेव के पतन, नेहरू के निधन तथा शास्त्रीजी के नेहरू का उत्तराधिकारी चुने जाने की भविष्यवाणी भी बहुत पहले कर दी थी। चीन द्वारा रूसी क्षेत्र में आक्रमण की उनकी भविष्यवाणी भी सही निकली। उन्हीं श्रीमती जीन डिक्सन की आगामी दिनों से संबंधित ये भविष्यवाणियाँ जो पत्र-पत्रिकाओं में छप चुकी हैं—

भारत में १९७५ के बाद तीव्र घटनाचक्र गतिशील होगा और वह भौतिक, आध्यात्मिक तथा राजनैतिक दृष्टि से तीव्रता से प्रगति करेगा। १९७६ से ८१ के बीच विश्व में कुछ बड़े नेताओं की हत्या के षड्यंत्र बनेंगे और इस दौरान अनेक राष्ट्राध्यक्षों को जान से हाथ धोना पड़ेगा। १९८१ से ८४ तक का समय विश्व के लिए अत्यंत तनातनी का रहेगा और इस अवधि में युद्ध की संभावना बढ़ जाएगी। अंतरिक्ष यात्राओं में प्रगति बराबर जारी रहेगी। पश्चिम में ईश्वर तथा धर्म पर आस्था बढ़ेगी। लोग अति भौतिक जीवन से विरक्ति का अनुभव करेंगे तथा धार्मिक आध्यात्मिक जीवन जीने की दिशा में प्रयासरत होंगे।

भारत में ग्रामीण-परिवार में जन्मा-पला व्यक्ति अपने विचारों और कार्यों से सारे संसार का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करेगा। वह गाँधीजी की तरह विश्व का मार्गदर्शन करेगा।

२. जूल वर्न

जूलवर्न एक विश्वविख्यात लेखक तो हैं ही, भविष्य-दूत भी हैं। जापान द्वारा मंचूरिया पर तथा इटली द्वारा अलवानिया पर अधिकार कर लेने की भविष्यवाणी सन १६३१ में ही उन्होंने कर दी थी। उस समय इसे किसी ने सही नहीं माना था। दूसरे महायुद्ध में जब ये बात सर्वथा सत्य सिद्ध हुई, तो जूलवर्न की धाक जम गई।

चीन द्वारा अणुबम बनाने भारत-पाकिस्तान में युद्ध छिड़ने, बंगला देश बनने, इजराइल द्वारा अरबों पर विजय पाने आदि की भविष्यवाणी जूलवर्न ने काफी पहले कर दी थी। एक गंभीर लेखक होने के नाते वे भविष्य कथन के पूर्व काफी सोच-विचार कर लेते थे। उनकी कुछ भविष्यवाणियाँ निम्नानुसार हैं—

१६८० से १६६० तक भीषण प्राकृतिक विप्लव, अतिवृष्टि समुद्री तूफान, अनावृष्टि, भूकंप, भूस्खलन आदि सामने आएँगे। भारत अत्यधिक शक्तिशाली बनकर उभरेगा। विश्व में उसका सम्मान बढ़ता चला जाएगा भारत से एक ऐसा व्यक्तित्व उभरेगा, जो सारे संसार को शांति का पाठ पढ़ाएगा। सारी पृथ्वी, विशेषकर शहरी क्षेत्र सन् १६८० तक भयंकर पर्यावरण-प्रदूषण से ग्रस्त हो जाएगा। नई-नई बीमारियाँ फैलेंगी, जो डाक्टरों की भी समझ में नहीं आएँगी। धीरे-धीरे लोगों में यांत्रिक सभ्यता के प्रति घृणा उभरेगी और बढ़ेगी। यूरोपीय जातियों का झुकाव भारतवर्ष की ओर बढ़ेगा तथा वे आध्यात्मिक जीवन में विशेष रुचि लेंगे।

३. प्रो० हरार

भविष्य वक्ताओं में प्रो० हरार अन्यतम हैं। इस धार्मिक इजरायली नागरिक को योरोप-अफ्रीका में देवदूत की संज्ञा प्राप्त है। अरब के प्रधान शाह मुहम्मद की यात्राओं की तैयारियाँ पूरी हो जाने पर भी तीन-तीन बार, वे यात्रा न कर सकेंगे, ऐसी भविष्यवाणियाँ उनके समय प्रो० हरार ने कीं। हर बार शाह ने अपनी ओर से हर संभव कोशिश की, वे यात्रा करें ही। पर पहली बार घोड़े से गिर पड़ने पर शाह के पैरों में खराबी आ जाने के कारण, दूसरी बार मौसम की खराबी के कारण विमान न उड़ पाने के कारण और

तीसरी बार पड़ौसी देश द्वारा सहसा हमला कर देने के कारण शाह मुहम्मद को यात्राएँ रोकनी पड़ीं। इस प्रकार हर बार प्रो० हरार की भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई। इससे प्रभावित होकर, शाह मुहम्मद ने प्रो० हरार को व्यक्तिगत रूप से बुलवाया और उन्हें अपना मुख्य मांगलिक सलाहकार बना लिया।

सबसे बड़ी बात यह है कि प्रो० हरार तिथिवार भविष्यवाणियाँ करते हैं। भारत-पाक युद्ध की तारीख उन्होंने लगभग २ वर्ष पूर्व ठीक-ठीक बता दी थी। बंगला देश के अभ्युदय की जब उन्होंने भविष्यवाणी की उस समय कोई इसकी कल्पना तक नहीं कर पाता था।

प्रो० हरार ने भविष्य के बारे में जो कथन प्रकाशित किए हैं, उनमें से कुछ ये हैं—

१९८० तक लंका, रूस, फ्राँस, भारतवर्ष आदि में अप्रत्याशित रूप ने सरकारें बदलेंगी। १९८० में सारे संसार में तनातनी बढ़ेगी। सन् १९८० से २००० तक का समय भारतवर्ष के लिए अत्यंत श्रेष्ठ तथा उन्नतिदायक है। १९८५ तक भारतवर्ष अनेक वैज्ञानिक शस्त्रों का निर्माण करेगा और एक प्रचंड शक्ति बनकर उभरेगा। भारत में एक ऐसा व्यक्ति पैदा हो गया है, जो कि भविष्य में संपूर्ण विश्व का मार्गदर्शन करेगा।

प्रो० हरार के अनुसार सन् २००० तक राजनैतिक परिवर्तन होंगे। ब्रिटेन, श्रीलंका, रूस और भारतवर्ष में अप्रत्याशित रूप से सरकार बदलेगी। इजरायल और अरब के समानांतर अक्षांश पर होने के कारण भारतवर्ष की स्थिति ठीक वैसी ही होगी। मित्र जैसे दिखाई देने वाले पड़ौसी देश या तो आक्रमण करेंगे या आक्रमण के समय मौन रहेंगे। अधिकांश प्रतिपक्ष का समर्थन करेंगे। इसके बाद दुनियाँ का नेतृत्व ऐसे लोगों के हाथ में होगा, जिनकी उनसे पहले तक लोगों ने कल्पना भी न की होगी। यह लोग वीर होने के साथ-साथ धर्मनिष्ठ भी होंगे।"

४. पीटर हरकौस

हालैंडवासी पीटर हरकौस को बीसवीं शताब्दी का महानतम भविष्यवक्ता कहा जाता है, क्योंकि उसकी भी भविष्यवाणियाँ समय पर

सही सिद्ध होती रही हैं। उसकी दूसरी विशेषता यह है कि वह किसी भी समय किसी व्यक्ति के बारे में भविष्य कथन करने में सक्षम हैं। विश्व भर के चिकित्सक, वैज्ञानिक तथा मस्तिष्क विशेषज्ञ अब तक पीटर हरकौस पर परीक्षण प्रयोग कर चुके हैं—यह जानने के लिए कि वह कौन-सी विलक्षणता है, जिसने इस व्यक्ति को इस रूप में समर्थ बना रखा है।

हरकौस अपने सामने आए किसी भी व्यक्ति को देखते ही उसके संपूर्ण अतीत और अनागत को जान लेता है। इतना ही नहीं, यदि किसी भी व्यक्ति के पहने हुए कपड़े या इस्तेमाल की हुई किसी वस्तु को उसके हाथ में दे दिया जाए, तब भी वह तत्काल उस व्यक्ति के भूत-भविष्य को स्पष्टता से बता सकता है।

अमेरिका तथा यूरोप के हजारों-लाखों व्यक्ति अब तक हरकौस से संपर्क कर लाभान्वित हो चुके हैं।

इन्हीं महानतम अंतर्दृष्टा पीटर हरकौस ने विश्व के भविष्य से संबंधित ये भविष्यवाणियाँ की हैं जो ध्यान देने योग्य हैं—

भारत का उदय वृहत्तर भारत के रूप में होगा। वहाँ से आध्यात्मिकता की एक प्रचंड लहर उठेगी। यह लहर संपूर्ण विश्व पर अपना प्रभाव डालेगी। लोग भारत से उठने वाली इस आध्यात्मिक धारा से अभिभूत होकर उसी दिशा में बढ़ेंगे और तब सुखी, संपन्न, एकात्म, विश्व-समाज का उदय तथा विकास होगा। प्रत्येक मनुष्य में देवत्व का उदय होगा और धरती पर स्वर्ग बन उठेगा।

५. नोस्ट्रोडेमस

यूरोप के विश्वविख्यात भविष्य-वक्ता द्रष्टा नोस्ट्रोडेमस ने फ्रांस में हुई भयंकर हिंसक क्रांति की भविष्यवाणी पहले ही कर दी थी। १५०३ में फ्रांस में ही जन्मे नोस्ट्रोडेमस को ख्याति उस समय मिली जब फ्रांस के विषय में की गई इनकी भविष्यवाणी बताए समय एवं स्वरूप के अनुसार अक्षरशः सही-सही उतरी। घटनाओं के पूर्वाभास शक्ति संपन्न होने का प्रमाण उस समय मिला तथा और भी पुष्ट हुआ जब नोस्ट्रोडेमस रास्ते से जाते हुए एक ईसाई साधु के चरणों में झुक पड़ा। साथ के मित्र के पूछे जाने पर उन्होंने बताया कि वह साधु पाँच वर्ष के बाद पोप बनेगा। यह समय सन १५८० का था।

नोस्ट्राडेमस द्वारा बताए गए समय १८८५ को साधु सर्व सम्मति से फ्रांस का पोप नियुक्त किया गया। इससे नेस्ट्रोडेमस की ख्याति और भी बढ़ गई। फ्रांस में वे अतींद्रिय क्षमता संपन्न व्यक्ति के रूप में माने जाने लगे।

नोस्ट्रोडेमस की ४००० भविष्यवाणियों का संकलन चार पुस्तकों में प्रकाशित है। कविता की शैली होने के कारण इनका नाम दिया गया है—'शतियाँ' प्रत्येक शतियाँ में १०० भविष्यवाणियाँ हैं। पंद्रहवीं सदी से लेकर अब तक की अधिकांश बातें अपने समयानुसार सही उतरी हैं। नेपोलियन के विषय में नोस्ट्राडेमस ने लिखा है—"कि इटली के निकट सामान्य परिवार में जन्मा एक बालक विश्व का सबसे बड़ा तानाशाह सम्राट बनेगा। अपने साम्राज्य के विस्तार के लिए वह अमानवीय प्रयत्न करेगा।" इसी क्रम में आगे वर्णन है कि उसके कुकृत्यों के कारण उसी के साथी विश्वासघात करेंगे। पराजित होने पर उसे निर्वासित कर एक द्वीप में बंदी के रूप में रखा जाएगा, यह स्थान उसके जीवन का उत्तरार्ध होना चाहिए। सभी जानते हैं कि नेपोलियन अपने ही मित्रों के विश्वासघात के कारण पकड़ा गया तथा सेंट हेलेना द्वीप में बंदी रहा। वहीं उसकी मृत्यु हो गई।

स्पेन में सन १९३६-३७ में हुए आंतरिक गृह युद्ध के विषय में नेस्ट्राडेमस ने भविष्यवाणी की थी। "फ्रैंकों नामक व्यक्ति स्पेन में जन-समूह एकत्रित करेगा। आंतरिक क्रांति होगी। इस गृह युद्ध के फलस्वरूप फ्रैंकों को निष्कासित किया जाएगा। उसे खाड़ी में प्रवेश करने की अनुमति नहीं होगी।" इतिहासवेत्ता जानते हैं कि चार शती पूर्व की गई नेस्ट्राडेमस की भविष्यवाणी किस प्रकार सही घटित हुई ? फ्रैंकों अपनी ही जन्मभूमि स्पेन में प्रवेश नहीं कर पाया।

हिटलर का एक निरंकुश शासक के रूप में उदय होने का उल्लेख भी शतियाँ में है। राइन के निकट आस्ट्रिया के पर्वतों में सामान्य परिवार में एक व्यक्ति जन्म लेगा, जो पोलैंड और हंगरी की रक्षा तो करेगा, पर हिंसक क्रांति का आश्रय लेने से उसका भविष्य भी अनिश्चित होगा।" हिटलर का अभ्युदय और पराभव का इतिहास प्रसिद्ध है। जो नेस्ट्राडेमस की भविष्यवाणी के अनुसार सही सिद्ध हुआ। द्वितीय महायुद्ध के विषय में नेस्ट्राडेमस ने कहा

था—"आग्नेयशास्त्रों एवं महाविनाशक बमों के प्रहार से बंदरगाह के निकट दो नगर युद्ध के अभिशाप सिद्ध होंगे। हिरोशिमा, नागाशाकी पर अमेरिका द्वारा गिराए गए परमाणु बमों से हुई क्षति ऐतिहासिक घटना के रूप में जानी जाती है।

बीसवीं सदी में सही घटित हुई नोस्ट्राडेमस की भविष्यवाणियों में प्रमुख-इंग्लैंड के राजा एडवर्ड अष्टम का सिंहासन त्याग तथा उसके स्थान पर एक अप्रत्याशित व्यक्ति का सिंहासनारूढ़ होना। एडवर्ड अष्टम ने श्रीमती सिंप्सन से विवाह करने की इच्छा प्रकट करना एक नैतिक अपराध माना। बाध्य होकर एडवर्ड को इंग्लैंड छोड़ना पड़ा। अन्य प्रमुख भविष्यवाणियों में पाकिस्तान का आंतरिक गृह युद्ध के फलस्वरूप दो भागों में विभक्त होना, अन्य मुस्लिम राष्ट्रों में आंतरिक विग्रह पैदा होना जैसी बातें प्रत्यक्ष देखी जा रही हैं। पाकिस्तान, ईरान, बंगाल देश में पनपता हुआ आंतरिक-संघर्ष इन राष्ट्रों के लिए एक बड़ा संकट बना हुआ है।

बीसवीं सदी की विभीषिकाओं में जिस चमत्कारी शोध का उल्लेख नोस्ट्राडेमस करते हैं, उसका उल्लेख एक जर्मनी से प्रकाशित बहुचर्चित पुस्तक में मिलता है। पुस्तक का नाम है—दी फ्यूचर आफ ह्यूमिनीटी। इसमें नोस्ट्राडेमस की कुछ भविष्यवाणियों का उल्लेख किया गया है। जीवन के अंतिम दिनों कुछ व्यक्ति नोस्ट्राडेमस से मिलने गए। उन्होंने कहा—भविष्य की कुछ ऐसी घटनाओं का उल्लेख कीजिए, जो महत्त्वपूर्ण हों। पहले तो वे सहमत नहीं हुए, पर अधिक आग्रह करने पर उन्होंने कहा कि बीसवीं सदी में यह विकसित बुद्धि स्वयं मानव जाति के लिए अभिशाप सिद्ध होगी। भौतिक प्रयास प्रकृति-संतुलन एवं मानवी कृत्य को श्रेष्ठ मार्ग की ओर मोड़ पाने में असमर्थ होंगे। इन परिस्थितियों में एक प्रचंड शक्ति का प्रादुर्भाव होगा, उसका जन्म तो बीसवीं सदी के आरंभ में ही हो जाना चाहिए, पर एशिया संभवतः भारत के उत्तराखंड में मानव-जाति के उज्ज्वल निर्धारण के कार्यक्रमों में एवं क्रियान्वयन में निरत होना चाहिए। उसके अन्य मानवतावादी कार्यक्रमों में सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य होगा, चेतना की सत्ता को वैज्ञानिक प्रयोगशाला में सिद्ध करना। इस बौद्धिक एवं विचारात्मक प्रयास के समक्ष विश्व के मूर्धन्य एवं

वैज्ञानिक भी नतमस्तक होंगे। समस्त भौतिक शक्तियाँ उसकी आध्यात्मिक शक्ति के समक्ष नत होंगी। नोस्ट्राडेमस ने रोमांचित होकर कहा कि "मुझे तो नवयुग के आगमन के स्पष्ट संकेत मिल रहे हैं। एशिया के उत्तराखंड से संस्कृति की एक धारा प्रचंड वेग से आ रही है जो समस्त मानव जाति को नव-जीवन देगी।" दुनियाँ को भावी महाविनाश से बचा सकने में यह शक्ति समर्थ होगी।

बीसवीं सदी की जिन विभीषिकाओं का उल्लेख नोस्ट्राडेमस ने पौने पाँच सौ वर्ष पूर्व किया है। उनको घटित होते प्रत्यक्ष देखा जा रहा है।

६. जान सैवेज

फ्लोरिडा (अमेरिका) की प्रसिद्ध अंतर्दृष्टि संपन्न, महिला जान सैवेज ने अब तक जितनी भी भविष्यवाणियाँ की हैं, उनमें से ६६ प्रतिशत सही सिद्ध हुई हैं। श्रीमती जान सैवेज ने एक भारतीय योगी से दीक्षा ग्रहण की है और योगाभ्यास द्वारा अपनी अंतर्दृष्टि का विकास किया है। उन्होंने अगले दिनों की संभावनाओं के संबंध में लिखा है—१९८१ की शताब्दी विश्व इतिहास में व्यापक उथल-पुथल और भयंकर परिवर्तनों के लिए लंबे समय तक याद की जाती रहेगी। यह क्रम १९८० से प्रारंभ होगा, जब अमेरिका की नहर पनामा तथा जापान के अधिकांश समुद्री भाग प्रबल भूकंप के कारण पृथ्वी की गोद में समा जाएँगे, आज रूस और अरब मित्र राष्ट्रों की तरह दिखाई देते हैं, किंतु धीरे-धीरे उनमें खाई पड़ेगी, उग्र विवाद होंगे। (उस समय तक तो विवाद की स्थिति नहीं थी, किंतु इस समय तक निश्चित ही दोनों देशों के बीच संदेहजनक परिस्थितियाँ जन्म ले चुकी हैं) और युद्ध हो जाएगा। १९८५ के लगभग अंतर्राष्ट्रीय विवादों के अत्यधिक उग्र होने की संभावना है।

७. एंडरसन

१९१० में अमेरिका के अवाबा नगर में जन्मे एंडरसन की ६७ प्रतिशत भविष्यवाणियाँ सत्य सिद्ध होती रही हैं। एक-एक दो-दो वर्ष आगे की हुई उसकी भविष्यवाणियों को लोगों ने सैकड़ों बार सत्य होते देखा है। एंडरसन को मुख्य ख्याति उनके अतुलित

शारीरिक पराक्रम और व्यायाम संबंधी अद्‌भुत प्रदर्शनों के कारण मिली, परंतु उनकी भविष्यवाणियों ने उन्हें अंतर्राष्ट्रीय स्तर का प्रसिद्ध व्यक्ति बनाया। उनकी सत्य सिद्ध होने वाली भविष्यवाणियों के कारण न केवल अमेरिका के वरन् दूसरे देशों के व्यापारी, उद्योगपति, फिल्म कलाकार, नेता आदि भी उससे भविष्य संबंधी प्रश्न पूछकर काम करते थे।

भविष्य दर्शन या अज्ञात दर्शन की यह क्षमता उनमें बचपन से ही उत्पन्न होने लगी थी। जब आठ वर्ष के थे तो एक दिन वह अपने घर की बैठक में खेल रहे थे। उन दिनों पहला विश्वयुद्ध प्रारंभ हो चुका था। एंडरसन का भाई नेल्सन कनाडा की सेना में कप्तान हो गया था। उसकी फोटो बैठक में लगी हुई थी। अचानक एंडरसन को न जाने क्या सूझा कि वह खेलते-खेलते अपनी माँ के पास गया और माँ का हाथ पकड़कर बैठक में ले गया और बोला, "माँ ! देखो ! भैया के चेहरे पर बंदूक की गोली लगी है और वह जमीन पर गिरकर मर चुके हैं।"

माँ ने डाँटा, "चल मूर्ख ! ऐसी बुरी बात नहीं कहते, पर एंडरसन फिर भी वही बात दोहराता रहा। माँ ने डाँट-फटकार कर किसी तरह चुप कराया, किंतु इस घटना के दो-तीन दिन बाद ही कनाडा से तार आया कि १ नवंबर १९७८ को गोली लगने से नेल्सन की मृत्यु हो गई। यह समाचार पढ़ते ही परिवार शोक-सागर में डूब गया और आश्चर्य भी कि एंडरसन को इस घटना का पूर्वाभास किस तरह हो गया था ?

जब दूसरा विश्वयुद्ध चल रहा था तो एंडरसन ने घोषणा की कि इस युद्ध में रूस और अमेरिका एक साथ मिलकर लड़ेंगे, पर आगे दोनों में शत्रुता हो जाएगी। एंडरसन ने जिस समय भविष्यवाणी की उस समय अमेरिका और रूस एक-दूसरे के अभिन्न मित्र थे और मित्र राष्ट्र दोनों के संयुक्त शत्रु। इसलिए तब किसी ने भी एंडरसन की इस बात पर विश्वास नहीं किया, लेकिन उस समय सभी लोग विस्मित रह गए, जब मित्र राष्ट्रों की सेनाओं से रूस और अमेरिका दोनों साथ-साथ मिलकर लड़े।

राष्ट्रपति रूजवेल्ट के दिवंगत हो जाने तथा एक अमरीकी सेनापति के राष्ट्रपति बनने की उनकी भविष्यवाणियाँ भी सही सिद्ध हुई। रूजवेल्ट की शीघ्र ही मृत्यु होने की भविष्यवाणी उन्होंने इस प्रकार आकस्मिक की थी कि तब वे पूर्ण तरह से स्वस्थ थे। उन पर विश्वास करने वालों ने सहज ही पूछा, क्या उनकी हत्या की जाएगी ? तो एंडरसन ने कहा नहीं वे स्वास्थ्य खराब होने के कारण दिवंगत होंगे। कुछ दिनों बाद रूजवेल्ट सचमुच बीमार पड़े, साधारण-सी बीमारी के झटके से ही वह चल बसे। एक सेनापति के अमेरिका का राष्ट्रपति बनने की भविष्यवाणी भी उस समय सही सिद्ध हुई जब जनरल आइजनहावर जो मित्र देशों की सेना में अमेरिका के सेनापति थे बाद में राष्ट्रपति बने। इसी प्रकार उन्होंने भारत स्वतंत्र होने की भी भविष्यवाणी की जो सही निकली।

युवावस्था बीतते-बीतते तक देश-विदेश में उनकी बहुत ख्याति फैल गई। मई सन १९४५ में एक दिन वे अपने आप अमेरिकी समाचार पत्र वाकर काउंट्री मैसैंजर के संपादक के पास गये और बोले—८ अगस्त को एक ऐसी घटना घटेगी, जिसमें जापान के साथ चल रहे युद्ध की स्थिति एकदम बदल जाएगी और १८ अगस्त तक युद्ध विराम की घोषणा भी कर दी जाएगी। संपादक ने यह घटना नोट कर ली, पर तब उन्हें सहसा विश्वास नहीं हुआ, किंतु इसके पहले एंडरसन की कई भविष्यवाणियाँ सही सिद्ध हो चुकी थी, उन्होंने इसकी भी परीक्षा करने के लिए अपने पास रख लिया। ८ अगस्त ही वह क्रूर दिन था, जब हिरोशिमा पर बम गिराया गया और उसके फलस्वरूप एक लाख से भी अधिक व्यक्ति मारे गये। इस व्रजपात से जापान बुरी तरह लड़खड़ा गया। उसने आत्म समर्पण कर दिया और उसी के साथ १८ अगस्त को युद्ध विराम की घोषणा भी कर दी गयी।

इसके बाद उन्होंने नीग्रो नेता मार्टिन लूथरकिंग, राबर्ट कैनेडी की हत्या की भविष्यवाणियाँ की जो शत-प्रतिशत समय और घटनाओं के साथ सही निकलीं। मार्टिन लूथर किंग की हत्या के लिए तो उन्होंने वारेन स्मिथ नामक एक प्रेस रिपोर्टर को २ अप्रेल को ही लिखकर पत्र दे दिया था। उस पत्र में यद्यपि उसने नाम नहीं लिखा,

पर नीग्रो नेता का स्पष्ट अर्थ मार्टिन लूथर किंग से ही था। इसी प्रकार उन्होंने जब दुबारा फिर कहा कि एक और नीग्रो नेता की हत्या होगी, तब तो लोगों ने उसे बिल्कुल ही निराधार बताया, किंतु २२ जुलाई १९६९ को जब स्व० मार्टिन लूथर किंग के भाई रेवरेड विलियम किंग का शव एक तालाब में तैरता पाया गया, तब लोगों को सच्चाई का पता चला।

एंडरसन का कथन है कि आगामी समय संसार के लिए महाविनाशकारी सिद्ध होगा। एशिया का सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश (चीन) उत्पात शुरू करेगा और उसका सामना करने के लिए अमरीका तथा रूस को एक होना पड़ेगा। अरब राष्ट्रों सहित, मुस्लिम बहुल राज्यों में आपसी क्रांतियाँ और भीषण रक्तपात होंगे। युद्ध और हिंसा का यह तांडव सन् १९८० के बाद निरंतर बढ़ता ही जाएगा। इस बीच सभी देशों के राजनैतिक प्रधानों का अस्तित्व खतरे में रहेगा और उनका प्रभुत्व घटता हुआ चला जाएगा।"

विनाश के साथ एंडरसन ने ऐसे उज्ज्वल भविष्य का संकेत दिया है, जिसमें सब लोग सुख-शांति से रहेंगे। वर्तमान भेद-भाव समाप्त होंगे और सब लोग एक परिवार की तरह एक शासन तंत्र एवं समाज व्यवस्था के अंतर्गत निर्वाह करेंगे।

❐ ❐

वर्तमान समय युग-परिवर्तन की संधि-वेला

संसार के सभी विद्वान, ज्योतिर्विद और अतींद्रिय दृष्टा इस संबंध में एकमत हैं कि युग-परिवर्तन का समय आ पहुँचा। उनके अनुसार यह समय युग संधि की वेला है और इन दिनों संसार में अधर्म, अशांति, अन्याय, अनीति तथा अराजकता का जो व्यापक बोल-बाला दिखाई दे रहा है, उसके अनुसार परिस्थितियों की विषमता अपनी चरम सीमा पर पहुँच गयी है। ऐसे ही समय में धर्म की रक्षा और अधर्म का विध्वंस करने के लिए भगवान का अवतार लेने की

शास्त्रीय मान्यता है। 'यदा यदा हि धर्मस्य' की प्रतिज्ञा के अनुसार ईश्वरीय सत्ता इस असंतुलन को संतुलन में बदलने के लिए कटिबद्ध है और संतुलन साधने के लिए सूक्ष्म जगत में उसी की प्रेरणा से परिवर्तनकारी हलचलें चल रही हैं।

युग-परिवर्तन के समय ईश्वरीय शक्ति के प्राकट्य और अवतरण की प्रक्रिया सृष्टिक्रम में सम्मिलित है। असंतुलन को संतुलन में बदलने के लिए अपनी प्रेरणा पुरुषार्थ प्रकट करने के लिए भगवान वचनबद्ध हैं। ऐसे ही अवसरों पर गीता में दिया गया उनका 'तदात्मानं सृजाम्यहम्' का आश्वासन प्रत्यक्ष हो रहा है। आज की स्थितियाँ भी ऐसी हैं कि उनमें ईश्वरीय शक्ति के प्राकट्य की भगवान के अवतार की प्रतीक्षा की जा रही है और सूक्ष्मदर्शी ईश्वरीय सत्ता की अवतरण प्रक्रिया को संपन्न होते देख रहे हैं।

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार यह समय कलियुग के अंत तथा सतयुग के आरंभ का है, इसलिए भी इस समय को युग संधि की वेला कहा जा रहा है। यद्यपि कुछ रूढ़िवादी पंडितों का कथन है कि युग ४ लाख ३२ हजार वर्ष का होता है। उनके अनुसार अभी एक चरण अर्थात एक लाख आठ हजार वर्ष ही हुए हैं। इस हिसाब से तो अभी नया युग आने में ३ लाख २४ हजार वर्ष की देरी है। वस्तुतः यह प्रतिपादन भ्रामक है। शास्त्रों में कहीं भी ऐसा उल्लेख नहीं मिलता कि ४ लाख ३२ हजार वर्ष का एक युग होता है। सैकड़ों वर्षों तक धर्मशास्त्रों पर पंडितों और धर्मजीवियों का ही एकाधिकार रहने से इस संबंध में जन साधारण भ्रांत ही रहा और इतने लंबे समय तक की युग गणना के कारण उसने न केवल मनोवैज्ञानिक दृष्टि से पतन की निराशा भरी प्रेरणा दी वरन् श्रद्धालु भारतीय जनता को अच्छा हो या बुरा भाग्यवाद से बँधे रहने के लिए विवश किया। इस मान्यता के कारण ही पुरुषार्थ और पराक्रम पर विश्वास करने वाले भारतीयों को अफीम के घूँट के समान इन अतिरंजित कल्पनाओं का भय दिखाकर, अब तक बौद्धिक पराधीनता में जकड़े रखा गया।

इस संबंध में ज्ञातव्य है कि जिन शास्त्रीय संदर्भों से युग गणना का यह अतिरंजित प्रतिपादन किया है, वहाँ अर्थ को

उलट-पुलटकर तोड़ा-मरोड़ा ही गया है। जिन संदर्भों को इस प्रतिपादन की पुष्टि के लिए प्रस्तुत किया गया है, वे वास्तव में ज्योतिष के ग्रंथ हैं। वह प्रतिपादन गलत नहीं है, प्रस्तुतीकरण ही गलत किया है अन्यथा मूल शास्त्रीय वचन अपना विशिष्ट अर्थ रखते हैं। उनमें ग्रह-नक्षत्रों की भिन्न-भिन्न परिभ्रमण गति तथा ज्योतिष शास्त्र के अध्ययन में सुविधा की दृष्टि से ही यह युग गणना है।

जितने समय में सूर्य अपने ब्रह्मांड की एक परिक्रमा पूरी कर लेता है, उसी अवधि को चार बड़े भागों में बाँटकर चार देव युगों की मान्यता बनाई गयी और ४ लाख ३२ हजार वर्ष का एक देव युग माना गया। प्रचलित युग गणना के साथ तालमेल बिठाने के लिए छोटे युगों को अंतर्दशा की संज्ञा दे दी गयी और उसी कारण वह भ्रम उत्पन्न हुआ, अन्यथा मनुस्मृति, लिंग पुराण और भागवत आदि ग्रंथों में जो युग गणना प्रस्तुत किए गए हैं, वह सर्वथा भिन्न ही हैं। मनुस्मृति में कहा गया है—

ब्राह्मस्यतु क्षपाहस्य यत्प्रामणं समासतः।
एकै कशो युगानान्तु क्रमशस्त्रन्निबधित।।
चत्वार्याहु सहस्राणि वर्शाणांतु कृतंयुग।
तस्यतावत् शती संध्या संध्याशश्च तथाविधः।।
इतेयेरेषु स संध्येषु स संध्याशेषु च त्रिंपु।
एकोयायेन वर्तन्ते सहस्राणि सतानि च।।

(मनु० १।६७-६९)

अर्थात—ब्रह्माजी के अहोरात्रि में सृष्टि के पैदा होने और नाश होने में जो युग माने गए हैं, वे इस प्रकार हैं—चार हजार वर्ष और उतने ही शत अर्थात चार सौ वर्ष की पूर्व संध्या और चार सौ वर्ष की उत्तर संध्या इस प्रकार कुल ४८०० वर्ष का सतयुग इसी प्रकार तीन हजार छह सौ वर्ष का त्रेता, दो हजार चार सौ वर्ष का द्वापर और बारह सौ वर्ष का कलियुग।

हरिवंश पुराण के भविष्य पर्व में भी युगों का हिसाब इसी प्रकार बताया गया है यथा—

अहोरात्रं विभज्यनो मानव लौकिकं परं।
सामुपादाय गणानां श्रृणु संख्यं, मंदिरम्।।
चत्वार्यैव सहस्राणि वर्षाणानुकृत युगं।
तावच्छसी भवेत्संध्या संध्याशश्च तथानृप।।
त्रीणि वर्ष सहस्राणि त्रेतास्या स्परिमाणतः।
तस्याश्च त्रिशति संध्याशश्च तथाविधः।।
तथा वर्ष सहस्रे द्वै द्वापरं परिकीर्तितः।
तस्यापि द्विशती संध्या संध्यांशश्चैवतद्वियः।।
कलिवर्ष सहस्त्रं व संख्यातोऽत्र मनिषिभिः।
तस्यापि शतिक संध्या संध्याशश्च तथा विधः।।

अर्थात—हे अरिदंभ ! मनुष्य लोक के दिन-रात का जो विभाग बतलाया गया है, उसके अनुसार युगों की गणना सुनिए, चार हजार वर्षों का एक सतयुग होता है और उसकी संध्या चार सौ वर्ष की तथा उतना ही संध्यांश होता है। त्रेता का परिणाम तीन हजार वर्ष का और उसकी संध्या तथा संध्यांश भी तीन-तीन सौ वर्ष का होता है। द्वापर को दो हजार वर्ष कहा गया है, उसका संध्या तथा संध्यांश दो-दो सौ वर्ष के होते हैं। कलियुग को विद्वानों ने एक हजार वर्ष का बतलाया है और उसकी संध्या तथा संध्यांश भी सौ-सौ वर्ष के होते हैं।

लिंग पुराण तथा श्रीमद्भागवत में भी इसी प्रकार की युग गणना मिलती है। भागवत के तृतीय स्कंध में कहा गया है—

चत्वारि त्रीणि द्वै चैके कृतादिषु यथाक्रमम्।
संख्यातानि सहस्राणि द्वि गुणानि शतानि च।।

(भाग० ३।१।१६)

अर्थात—चार, तीन, दो और एक ऐसे कृतादि युगों में यथा क्रम द्विगुण सैकड़ों की संख्या बढ़ती है। आशय यही है कि कृतयुग के चार हजार वर्ष में आठ सौ वर्ष और जोड़कर ४८०० वर्ष माने गये। इसी प्रकार शेष तीनों युगों की कालावधि समझी जाए। कुछ स्थानों पर मनुष्यों के व्यवहार के लिए बारह वर्ष का एक युग भी माना गया है; जिसको एक हजार से गुणा कर देने पर देव युग होता है, जिसमें

चारों महायुगों का समावेश हो जाता है। इस बारह वर्ष के देवयुग को फिर एक हजार से गुणा करने पर १ करोड़ २० लाख वर्ष ब्रह्मा का एक दिन हो जाता, जिसमें सृष्टि की उत्पत्ति और लय हो जाता है भगवान कृष्ण ने गीता में इसी युग की बात कही है—

सहस्रयुगपयन्त मर्ध्याद् ब्रह्माणो विदुः।
रात्रिं युग सहस्रांतां तेऽहोरात्र विदोजना।।

(८।१७)

अहोरात्रि को तत्वतः जानने वाले पुरुष समझते हैं कि हजार महायुगों का समय ब्रह्मदेव का एक दिन होता है और ऐसे ही एक हजार युगों की उसकी रात्रि होती है। लोकमान्य तिलक ने इसका अर्थ स्पष्ट करते हुए लिखा है कि महाभारत, मनुस्मृति और यास्कनिरुक्त में इस युग गणना का स्पष्ट विवेचन आता है। लोकमान्य तिलक के अनुसार "हमारा उत्तरायण देवताओं का दिन है और हमारा दक्षिणायन उनकी रात है, क्योंकि स्मृति ग्रंथों और ज्योतिष शास्त्र की संहिताओं में भी उल्लेख मिलता है कि देवता मेरु पर्वत पर अर्थात् उत्तर ध्रुव में रहते हैं अर्थात् दो अयनों छः-छः मास का हमारा एक वर्ष देवताओं के एक दिन-रात के बराबर और हमारे ३६० वर्ष देवताओं के ३६० दिन-रात अथवा एक वर्ष के बराबर होते हैं। कृत, त्रेता, द्वापर और कलियुग ये चार युग माने गये हैं। युगों की काल गणना इस प्रकार हैं कि कृत युग में चार हजार वर्ष, त्रेता युग में तीन हजार, द्वापर में दो हजार और कलियुग में एक हजार वर्ष। परंतु एक युग समाप्त होते ही दूसरा युग एकदम आरंभ नहीं हो जाता, बीच में दो युगों के संधिकाल में कुछ वर्ष बीत जाते हैं। इस प्रकार कृत युग के आदि और अंत में प्रत्येक ओर चार सौ वर्ष का, त्रेता युग के आगे और पीछे प्रत्येक ओर तीन सौ वर्ष का, द्वापर के पहले और बाद में प्रत्येक ओर दो सौ वर्ष का तथा कलियुग के पूर्व और अनंतर प्रत्येक ओर सौ वर्ष का संधिकाल होता है, सब मिलाकर चारों युगों का आदि अंत सहित संधिकाल दो हजार वर्ष का होता है। ये दो हजार वर्ष और पहले बताए हुए साँख्य मतानुसार चारों युगों के दस हजार वर्ष मिलाकर कुल बारह हजार वर्ष होते हैं।

—(गीता रहस्य भूमिका, पृष्ठं-१६३)।

इन गणनाओं के अनुसार हिसाब फैलाने से पता चलता है कि वर्तमान समय संक्रमण काल है। प्राचीन ग्रंथों में हमारे इतिहास को पाँच कल्पों में बाँटा गया है—(१) महत् कल्प १ लाख ९ हजार ८ सौ वर्ष विक्रमीय पूर्व से आरंभ होकर ८५८० वर्ष पूर्व तक (२) हिरण्यु गर्भ कल्प ८५८०० विक्रमीय पूर्व से १८०० वर्ष पूर्व तक (३) बाह्य कल्प ६०८०० विक्रमी पूर्व से ३०८०० वर्ष पूर्व तक (४) पाद्म कल्प ३७८०० विक्रम पूर्व से १३८०० वर्ष पूर्व तक और (५) वाराह कल्प १३८०० विक्रम पूर्व से आरंभ होकर अब तक चल रहा है।

कलियुग संवत् की शोध के लिए राजा पुलकेशिन ने विद्वान ज्योतिषियों से गणना कराई थी। दक्षिण भारत के 'इहोल' नामक स्थान पर प्राप्त हुए एक शिलालेख में इसका उल्लेख मिलता है, जिससे यही सिद्ध होता है कि कल्कि का प्राकट्य इन्हीं दिनों होना चाहिए। 'पुरातन इतिहास शोध-संस्थान' मथुरा के शोधकर्त्ताओं ने भी इसी तथ्य की पुष्टि की है और ज्योतिष के आधार पर यह सिद्ध किया है कि 'इस समय ब्रह्मरात्रि का तमोमय संधिकाल है।

इसी संधिकाल में असंतुलन उत्पन्न होता है। दैवी शक्तियों पर आसुरी प्रवृत्तियों का संघात होता है तथा अनीतिमूलक अवांछनीयताएँ उत्पन्न होती हैं। नव निर्माण की सृजन-शक्तियाँ ऐसे ही अवसरों पर जन्म लिया करती हैं, क्योंकि तप-साधन होने के कारण ऐसे समय विभिन्न अनयकारी परिस्थितियाँ उत्पन्न होती हैं। मनुष्यकृत संकट और प्राकृतिक आपदाओं की वृद्धि जब चरम सीमा पर पहुँचने लगती है तो उसी समय निर्माणकारी सत्ता अपने सहयोगियों के साथ अवतरित होती है और जहाँ एक ओर अधर्म, अन्याय, अनाचार बढ़ता है, वहाँ ये शक्तियाँ धर्म, संस्कृति, सदाचार, सद्गुण तथा सद्भावों को बढ़ाकर संसार में सुख-शांति की स्थापना के लिए प्रयत्नशील होती हैं।

संक्रमण वेला में किस प्रकार की परिस्थितियाँ बनती और कैसे घटना क्रम घटित होते हैं, इसका उल्लेख महाभारत के वन पर्व में इस प्रकार आता है

ततस्तु मुले संघातेव वर्तमाने युगे क्षये।
यदा चन्द्रस्य सूर्यस्य तथा तिस्य वृहस्पति।।

एक राशौ समेष्यन्ति प्रयत्स्यति यदा कृतम्।
काल वर्षि च पर्जन्यो नक्षत्राणि शुभानि च।।
क्षेम युभिक्षमारोग्य भविष्यति निरामयम्।।

अर्थात्—जब एक युग समाप्त होकर दूसरे युग का प्रारंभ होने को होता है, तब संसार में संघर्ष और तीव्र हलचल उत्पन्न हो जाती है। जब चंद्र, सूर्य, वृहस्पति तथा पुष्य नक्षत्र एक राशि पर आएँगे, तब सतयुग का शुभारंभ होगा। इसके बाद नक्षत्रों की कृपा वर्षा होती है। पदार्थों की वृद्धि से सुख-समृद्धि बढ़ती है। लोग स्वस्थ और प्रसन्न होने लगते हैं।

इस प्रकार का ग्रह योग अभी कुछ समय पहले ही आ चुका है। अन्यान्य गणनाओं के आधार पर भी यही सिद्ध होता है कि युग परिवर्तन का ठीक यही समय है। ठीक इन्हीं दिनों युग बदलना चाहिए।

मक्का के हमीदिया पुस्तकालय में रखी "अल्कशफ बल्कस्मफी मार्फत" तथा अरबी की पुस्तक" "मालावृद कुब्लुत कयामत" में भी १४वीं सदी में व्यापक क्रांति संघर्ष और युग परिवर्तन का संकेत है। सूरदास जी ने अपने एक पद में अपने अतींद्रिय ज्ञान के आधार पर लिखा था—

एक सहस्त्र नौ सौ के ऊपर ऐसौ योग परै।
सहस्त्र वर्ष लों सतयुग बीते धर्म की बेल बढ़ै।।

अर्थात—संवत १६०० के बाद संसार में परिवर्तन योग है इस महा परिवर्तन के बाद संसार में धर्म की बेलि बढ़ेगी और हजारों वर्ष तक सतयुग फले-फूलेगा।

द्विजार्ति पूर्वका लोकः क्रमेण प्रभविष्यति।
दैवः कालान्तरेऽन्यस्मित्पुनर्लोक विवृद्धये।।

—महाभारत

अर्थात्—युग-परिवर्तन के इस संधिकाल में द्विजन्म संस्कार संपन्न आदर्शवादी व्यक्तियों का उत्थान होगा और भगवान फिर से संसार को सुख-समुन्नति की ओर अग्रसर करेंगे।

विजयाभिन्दन बुद्ध जो और निष्कलंक इति आय।
मुक्ति देतौ सबन को मेट सबै असुराय।।
एक सृष्टि धनी भजन एकै एक ज्ञान एक आहार।
छोड़ बैर मिले सब य्यार सों बया सकल में जै-जैकार।।
अक्षर के दो चश्में नहासी नूर नजर।
बीसा सो बरसें कायम होसी वेराट सचराचर।।

मालिका नामक उड़िया ग्रंथ में सतुयग आगमन की सूचना देते हुए महायोगी अच्युतानंद ने लिखा है—

बालमुकुंदर शालियाव शेष हवे।
से हि दिन कलियुग संपूर्ण होइवे।।

उड़ीसा में प्रचलित बालमुकुंद का संवत् समाप्त होते ही कलियुग भी समाप्त हो जाएगा। इस बात को भक्त लोग अपने आप जान लेंगे, यह सभी गणनाएँ इस बात की प्रमाण हैं कि नये युग का आविर्भाव हो चला, अब उसे कोई भी रोक नहीं सकता।

हीलिंग लाइफ के संपादक पादरी जान मलार्ड ने भी युग परिवर्तन का समर्थन करते हुए लिखा है—

आज संसार की समस्याएँ इतनी जटिल हो गई हैं कि उन्हें मानवीय बुद्धि और बल द्वारा सुलझाया नहीं जा सकता। विश्वशांति अब मनुष्य की ताकत के बाहर हो गयी है तथापि हमें निराश नहीं, होना है, क्योंकि ऐसे संकेत मिल रहे हैं कि भगवान धरती पर आ गया है और वह अपनी सहायक शक्तियों के साथ नवयुग स्थापना के प्रयत्नों में जुट गया है। उनकी बौद्धिक और आत्मिक क्षमता उसके अपने आप अवतार होने की बात स्पष्ट कर देगी, वह दुनियाँ का उद्धारक देर तक पर्दे में छिपा नहीं रह सकता।

डब्लू ई० ओरचार्ड ने भी अपना मत ऐसे ही व्यक्त करते हुए लिखा है। इजरायल के निवासी जिस प्रभु के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं, वह धरती पर आ गये हैं और अब उनके दुःखों के साथ सारे संसार के दुःखों का अंत होने वाला है। भगवान अपनी सृष्टि में अमंगल, अन्याय, अत्याचार नहीं रहने देते। आज वह उस सीमा तक बढ़ गये हैं कि उन्हें व्यक्त होना ही पड़ेगा।"

स्वामी असीमानंद का कथन है—मुझे इस समय भगवान की अनुपम सत्ता प्रसारित होती जान पड़ती है। वह दिन समीप है, जब सारे संसार में प्रेम, समता और भ्रातृभाव की भावनाएँ गूँज उठेंगी। कलियुग का अंत होकर एक नये युग का श्री गणेश होगा और युगों की शृंखला का नया क्रम शुरू हो जाएगा।

सतयुग, द्वापर, त्रेता या कलियुग का कोई स्वतंत्र अस्तित्व या स्वरूप नहीं है, यह तो मानवीय वृत्तियों के बहाव मात्र है। जन मानस में धर्म, अध्यात्म, कर्म फल, परलोक, पुनर्जन्म, आस्तिकता, उपासना, आत्म-कल्याण, प्रेम, दया, करुणा, उदारता, सहयोग आदि शाश्वत मान्यताओं एवं मानवीय सद्गुणों के प्रति आस्था प्रगाढ़ होती है तो वही सतयुग हो जाता है। फिर क्रमशः रजोगुण बढ़ता है और लोगों की महत्त्वाकांक्षा में साहस, संघर्ष आदि राजसी गुण सम्मिश्रित, श्रृद्धा, अनुशासन, न्यायप्रियता बनी रहती है तो वह युग त्रेता हो जाता है। द्वापर, रजोगुण और तामसी वृत्तियों के मिलाप का काल होता है। इसी प्रकार जब समाज और जन मानस की विचारणाएँ कुत्सित हो जाती हैं, क्रिया-कलाप छुद्र इंद्रिय वासनाओं को भड़काने वाले, स्वेच्छाचारी हो जाते हैं, लोग पाप, अन्याय, अनीति को ही धर्म मान लेते हैं, तभी कलियुग हो जाता है। यह सब एक प्रकार की बाहुल्यता के परिचायक हैं, अन्यथा सतयुग में असुरों की संख्या कम नहीं रही। शुंभ-निशुंभ, सहस्त्रबाहु वाणासुर, रावण, कंस, दुर्योधन, दुःशासन, त्रिपुरासुर आदि भयंकर-कर्मा राक्षस श्रेष्ठ युगों में ही पैदा हुए, फिर उन्हें सतयुग, द्वापर, त्रेता क्यों कहा जाए ? इस युग को कलियुग क्यों न कहा जाए ? यदि आज लोगों की वृत्तियों में धर्म और आस्तिकता के, प्रेम, सद्भाव और सद्गुणों के प्रति आस्थाएँ जाग्रत हो जाएँ तो सतयुग आने में संदेह ही क्या ? 'ऐतरेय ब्राह्मण' का कथन भी यही है—

कलिः शयानो भवति संजिहानस्तु द्वापरः।
उत्तिष्ठन्त्रेता भवति कृतं संपद्यते चरन्।।

अर्थात्—व्यक्ति व समाज का सुषुप्त अवस्था में पड़े रहना ही कलियुग है। जब वह जम्हाई लेता है, अँगड़ाई लेता है, तब द्वापर की अवस्था आती है। उठकर बैठ जाने, निद्रा त्याग देने का नाम ही

त्रेता और उठकर चल देने, विचारशील, क्रियाशील, अध्यवसायी उद्यमी होने का नाम ही सत्युग है।

यह भाववाचक अभिव्यंजना बताती है कि युग काल से प्रतिबंधित नहीं। कलियुग के ४ लाख ३२ हजार वर्ष का होने की बात गलत है। मनुष्य की वृत्तियों में संशोधन कर, उन्हें ऊर्ध्वगामी बना दिया जाए तो किसी भी युग को किसी युग में बदला जा सकता है। अवतार इसी उद्देश्य से आते रहे हैं। उन्होंने सत्युग की स्थापना जनमानस की दिशाओं को मोड़कर ही की है।

प्रसिद्ध भारतीय महायोगी और आजीवन अध्यात्म की मशाल प्रज्ज्वलित रखने वाले महर्षि अरविंद अतींद्रिय दृष्टा थे। वे लोगों की भविष्यवाणियाँ करने जैसे चमत्कारों को आत्म-कल्याण में बाधक बताते थे। इसलिए उन्होंने अनावश्यक भविष्यवाणियाँ नहीं की, पर लोगों को शक्ति और धैर्य दिलाने वाली भविष्यवाणियाँ ही उन्होंने कीं और सच निकलीं। सन १९३६ में उन्होंने कहा था कि आठ वर्ष बाद भारत स्वतंत्र हो जाएगा, पर शीघ्र ही वह टुकड़ों में बँट सकता है. दोनों बातें सच निकलीं।

युग-परिवर्तन के संबंध में उनकी भविष्यवाणियाँ बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। एक बार उन्होंने श्री यज्ञशिखा माँ को बड़ी आह्लादपूर्ण मुद्रा में बताया।

'मेरे अंतःकरण में दैवी स्फुरणाएँ हिलोरें मार रही हैं और कह रही हैं—भारत का अभ्युदय बहुत निकट है। कुछ लोग इसे पश्चिमी सभ्यता का अनुयायी बनाने का प्रयत्न करेंगे, पर मेरा विश्वास है कि भारतवर्ष में एक अभियान प्रारंभ होगा, जो यहाँ की असुरता को नष्ट करके, फिर से धर्म को एक नई दिशा देगा और इस देश की प्रतिष्ठा, यहाँ के गौरव को बढ़ाएगा। यह आंदोलन संसार में फिर से सतयुग की-सी सुख-सौम्यता लाएगा।'

हरियाणा के प्रसिद्ध संत बाँगड़ ने स्पष्ट शब्दों में कहा है—

संवत बीसा द्वौ बीसा कूं असा जोग अनौखा आवै से।
नौ ग्रह मिलसी एक रास पर गुरुदशा बिचलावै सै।
राजा प्रजा को घृणा दुःखनूं सौ, कोहराम मचावै सै।
पढ़सी विकट अकाल वाद सूं अनावृष्टि दिखलावै है।

धरती फटै, आकाश टूटि के महानास सपहावै है।
असा बखत नो ज्योति प्रगट्या सबकी राह यह दिखावै है
कह बांगड़ की बात झूठ ना कतै कणै हवै पावै है।
लइसी रयाख्या गोरा तुरकां राजराजाना धणी धणी।
तुरक तवारा मिटसी रेखी अमरीसा छेट छणी।
उसै जगंड़ी नग चबारा धरणी कोय देखावणी।
दुःख सर दुःख पावसी दुनियां धुंध कोणली पावै सी।

अकबर के समकालीन इन महान संत का उल्लेख 'फरजान-ए-रशीदी' पुस्तक में भी मिलता है। उपरोक्त छंद में जो स्थितियाँ बतायी गई हैं, उनकी संगति वर्तमान परिस्थितियों से बहुत मिलती-जुलती है। लोकश्रुति के रूप में प्रचलित यह पंक्तियाँ कई पुराने लोगों को कंठाग्र हैं और "फरमान ए रशीदी" में भी संत बाँगड़ की इसी तरह की भविष्यवाणियाँ मिलती हैं। इस छंद का अर्थ इस प्रकार हैं, संवत २०४० (बीसा-द्वौ बीसा) को ऐसा विचित्र संयोग पड़ने वाला है, जिसके कारण दुनियाँ पर अगणित आपदाएँ और भयंकर विपदाएँ आएँगी। इस तरह की संभावना उस समय प्रत्यक्ष होने लगेगी, जब नौ ग्रह एक ही राशि में स्थित होंगे तथा फाल्गुन मास में पूर्ण सूर्य ग्रहण होगा (उल्लेखनीय है कि १६ फरवरी को पड़ा सूर्य ग्रहण फाल्गुन मास में ही था तथा नौ ग्रह भी अगले दिनों सूर्य के एक सीध में आ रहे हैं) इस योग से शासन चलाने वालों के साथ-साथ जनता को भी अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। अकाल अतिवृष्टि, अनावृष्टि, भूकंप, उल्कापात आदि प्राकृतिक विपदाओं के अतिरिक्त विभिन्न देशों में युद्ध की भी संभावना है। अंग्रेज (गोरा) और तुरका (मुस्लिम) राष्ट्रों के बीच संघर्ष की पूरी-पूरी संभावना संत बाँगड़ ने बतायी है। मनुष्यकृत उत्पातों और प्राकृतिक विपदाओं के कारण कई देशों के तहस-नहस हो जाने तथा जन-जीवन के बुरी तरह अस्त-व्यस्त होने की बात उपरोक्त पंक्तियों में स्पष्ट की गई है।

इस प्रकार के भविष्य कथन केवल भारत में ही मिलते हों, ऐसी बात नहीं है। विश्व की तमाम भाषाओं के प्राचीन साहित्य में वर्तमान समय को युग संधि का काल बताया गया है। इस तरह के भविष्य कथन वाले साहित्य का जहाँ भी उल्लेख आता है, उसमें

बाइबिल की पुरानी संहिता का उल्लेख सर्वत्र आता है। बाइबिल का यह भाग (ओल्ड टेस्टामेंट) ईसा से भी पहले रचा गया था और उसमें ईसा के जन्म से लेकर अब तक की घटनाओं का सविस्तार उल्लेख आता है।

बाइबिल की भविष्यवाणियाँ 'सात समय' अथवा 'सेवन टाइम्स' के नाम से जानी जाती हैं। इन्हें लेकर कई पुस्तकें लिखी गयीं, इनकी विवेचनाओं के लिए सैकड़ों विद्वानों ने अपना समय और श्रम खपाया है। बाइबिल की यह भविष्यवाणियाँ 'डैनियल तथा रिवेलेशन' अध्यायों में दी गई हैं। यद्यपि इन सबकी भाषा काफी गूढ़ है और इन्हें मुख्यतः रूपक शैली में ही लिखा गया है। इन भविष्यवाणियों में कहा गया है, जब यह 'सात समय' का जमाना आएगा और नये युग की शुरूआत होगी, उस समय तमाम दुनियाँ में लड़ाई-झगड़े फैल जाएँगे और प्रकृति इतनी क्रुद्ध हो उठेगी कि उसके कारण बड़ी संख्या में लोग मरने लगेंगे। बाईबिल के 'मैथ्यू' अध्याय २४ में इस समय की विभीषिकाओं का चित्रण इन शब्दों में किया है, "उस वक्त चारों तरफ लड़ाइयाँ होने लगेंगी और लड़ाई की अफवाहें सुनाई देने लगेंगी। एक मुल्क दूसरे मुल्क के खिलाफ खड़ा होगा और एक सल्तनत दूसरी सल्तनत के। उस समय अकाल पड़ेंगे, महामारी फैलेगी और जगह-जगह भूकंप आएँगे। यह हालत तो शुरू में होगी और इसके बाद इससे कहीं ज्यादा कष्ट भोगने पड़ेंगे।

बाइबिल के 'रिवेलेशन' अध्याय में महात्मा जान की निम्नलिखित भविष्यवाणियाँ उल्लेखनीय हैं—'जब उसने दूसरी मुहर को तोड़ा तो उसमें से दूसरा जानवर निकला। यह लाल रंग का घोड़ा था। जो उस पर बैठा था, उसे इस बात की शक्ति दी गई थी कि संसार की शांति को भंग कर दे और युद्ध आरंभ करा दे। उस सवार के हाथ में एक बहुत बड़ी तलवार दी गई थी।

(रिवेलेशन अ० ६)

लाल रंग का आशय युद्ध से लगाया गया है। यद्यपि इन दिनों प्रकट तौर पर किन्हीं देशों में युद्ध नहीं चल रहा, परंतु इस बात से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि विभिन्न देशों में जो आपसी तनातनी, गुटबंदी और शीत युद्ध की-सी स्थिति बनी हुई है, वह कभी

भी युद्ध का विस्फोट कर सकती है। कब किस बात को लेकर कौन-सा देश युद्ध की घोषणा कर देगा ? इस बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता।

बाइबिल के रिवेलेशन 'अध्याय छह' में कहा है—'जब उसने तीसरी मुहर को तोड़ा तो उसमें से तीसरा जानवर निकला। वह एक काले रंग का घोड़ा था और उसके ऊपर बैठे हुए सवार के हाथ में एक तराजू दी गई थी। मैंने यह आवाज सुनी कि एक सिक्के का एक पैमाना गेहूँ मिलेगा और तीन पैमाने जौ का दाम एक सिक्का होगा।

यों महँगाई और वस्तुओं का अभाव तो पिछले कई वर्षों से चला आ रहा है, किंतु इन दिनों वस्तुओं के मूल्य जिस तेजी से बढ़ रहे हैं, उस वृद्धि ने निश्चय ही लोगों में भय का संचार कर दिया है। मूल्य वृद्धि का एक कारण वस्तुओं का अभाव भी है। जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ती जाएगी वैसे-वैसे अन्न संकट और भयंकर होता जाएगा।

बाइबिल की 'लैमेनटेशन' नामक पुस्तक में इसका वर्णन करते हुए लिखा है—लोगों के चेहरे कोयले की तरह काले हो जाएँगे। वे गलियों में मारे-मारे फिरेंगे। जो लोग तलवार से मारे जाते हैं, वे उन भूख से मरने वालों की अपेक्षा सुख में रहेंगे।

अकाल के अतिरिक्त विनाश की परिस्थितियाँ उत्पन्न करने वाले दूसरे कारणों की ओर संकेत करते हुए रिवेलेशन अध्याय ६ में लिखा गया है—"जब उसने चौथी मुहर को तोड़ा तो उसमें से चौथा जानवर निकला। वह एक पीले रंग का घोड़ा था। उस पर मृत्यु का देवता बैठा था। इस देवता को इस बात की ताकत दी गयी थी कि वह पृथ्वी के चौथाई भाग में तलवार, प्लेग, अकाल और जंगली जानवरों आदि के द्वारा मनुष्यों का नाश करे।"

'जब उसने छठी मुहर को तोड़ा तो मैंने एक भयंकर भूकंप देखा। उस समय सूर्य काले कपड़े की तरह लाल पड़ गया। आसमान के तारे इस तरह टूटने लगे, जिस प्रकार किसी पेड़ को हिलाने से पके फल गिरने लगते हैं। हर एक पहाड़ और टापू हटने लगा। राजा बादशाह से लेकर गरीब आदमी तक ईश्वर के इस भयंकर कोप से घबड़ाकर पहाड़ों की गुफाओं और चट्टानों में आ छुपे।"

बाइबिल में उल्लेख आता है कि यह वृतांत लिखते हुए वह स्वयम् चौंक पड़े और अपने आप से पूँछ बैठे 'हाऊ लाँग शैल इट बी टू द एंड आफ दीज वंडर्स ? ये आश्चर्यजनक बातें कितने समय तक दिखाई पड़ेंगी ?

तब एक देवदूत प्रकट होता है और डैनियल को बताता है जब पवित्र जाति वालों को अर्थात सदाचारी सत्कर्म परायण लोगों का ह्रास होने लगेगा, तब ये सब घटनाएँ सही सिद्ध होंगी। डैनियल ने कहा—"मैं आपकी बात सुन रहा हूँ, पर मुझे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है! कृपाकर बताइए कि संसार का अंतिम परिणाम क्या होगा और मनुष्य जाति को आगे चलकर क्या-क्या सहना पड़ेगा ?"

उस समय डैनियल को चुप रहने के लिए कहते हुए देवदूत ने कहा—हे डैनियल ! तुम अपने रास्ते पर चलते चले जाओ, क्योंकि भविष्यवाणी के शब्दों का अर्थ गुप्त रखा गया है और उस पर मुहर लगा दी गई, तब तक मेरे लिए जबकि इस समय का अवसर आ जाए। जो बुद्धिमान होंगे वे अंतिम दिनों तक इसका अर्थ समझ सकेंगे।

सन् १७६४ में डा० जान गांमिग तथा १६६६ में जेम्स ग्रांट ने इन भविष्यवाणियों का अर्थ निकाला और यहूदियों को उनके पुनर्वास का समय आखिरी समय बताया। स्मरण रहे इस शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक यहूदियों के मूल निवास स्थान पर दूसरे देशों का अधिकार था। पैलेस्टाइन पर तुर्की का राज्य था। सन १६४८ में उन्हें पैलेस्टाइन में फिर से बसाया गया तथा इजराइल संसार के नक्शे पर स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में उभरा।

प्रसिद्ध पुरातत्त्व वेत्ता और यहूदियों की प्राचीन भाषा के विद्वान डा० विलियम अलब्राहट ने इस घटना का संदर्भ बाइबिल की भविष्यवाणियों से जोड़ते हुए लिखा है कि अब तक सभी भविष्य कथन सही सिद्ध होते आये हैं। इसमें तुर्की का पतन, हिटलर का उदय, तानाशाही शासकों का वर्चस्व आदि कई भविष्यवाणियाँ हैं, जो सात समय बीत जाने का लक्षण बताई गयी हैं।

ट्रंपेट्स या बगुलों से आशय युद्ध के उद्घोषों का निकाला गया है। इन दिनों जिस तरह के शस्त्र और युद्ध में काम आने वाले उपकरण खोज निकाले गए हैं, उनमें से ज्ञात शस्त्रास्त्रों की संहारक

क्षमता पढ़-सुनकर ही रोमांच हो रहा है, उनमें से नब्बे प्रतिशत गोपनीय रखी जाती हैं। जो कुछ जानकारियाँ सामने आती हैं, वे भी दूसरे देशों द्वारा की गई गुप्तचरी के परिणामस्वरूप प्रकाश में आती हैं अन्यथा अधिकांश तो गुप्त ही रहती हैं। फिर भी जितनी जानकारियाँ प्रकाश में आई हैं, उनसे उपरोक्त विभीषिकाओं का शब्दशः चित्र प्रस्तुत होता है।

उपरोक्त भविष्यवाणियों के समय निर्धारण के संबंध में जेम्स ग्रांट ने लिखा है कि बाइबिल उल्लखित सात समय का अर्थ २५२० वर्ष बताया है अथवा एक समय को ३६० वर्ष माना है। स्मरणीय है कि ये भविष्यवाणियाँ ईसा से करीब ५००-६०० वर्ष पूर्व की गई थीं। जेम्स ग्रांट ने हिसाब लगाकर बताया है—यह भविष्यवाणियाँ १६८० के आस-पास वाले समय से संबंध रखती हैं। प्रख्यात ज्योतिषी काउंट लुईस हैमन ने भी यही वह समय बताया है, जब रोग, बीमारियों तथा युद्धों के कारण मनुष्य जाति बुरी तरह त्रस्त अर्थात् विनाश की चरम सीमा पर पहुँचेगी।

पटना की "खुदा बख्श ओरियंटल लाईब्रेरी" में फारसी कसीदों (कविता) की पुस्तक है, जो बुखारा के सुप्रसिद्ध संत शाह नियामतुल्लाबल्ली साहब की लिखी हुई है। इस पुस्तक में उन्होंने लिखा है, जापान और रूस में युद्ध होगा (१९०४ में रूस और जापान में युद्ध हुआ था।) जापान में भयंकर भूकंप आएगा (१९२३ में भूकंप आया) प्रथम विश्व युद्ध में अलप (अंग्रेज) और जीम (जर्मन लड़ेंगे उसमें अँग्रेज जीतेंगे पर युद्ध में एक करोड़ इकतीस लाख व्यक्ति मारे जाएँगे (ब्रिटिश कमीशन की रिपोर्ट के अनुसार सचमुच इस युद्ध में एक करोड़ तीस लाख लोगों की मृत्यु का विवरण दिया गया है) जर्मनी दो भागों में बँटकर, आपस में तनावपूर्ण स्थिति में आ जाएँगे। द्वितीय विश्व युद्ध में जापान पर बम विस्फोट की भविष्यवाणी भी सच निकली। इस तरह उनकी एक भी भविष्यवाणी अभी तक गलत नहीं हुई है।

भारत के प्रसंग में बली साहब ने लिखा है, कि मुसलमानों के हाथ से यह मुल्क विदेशियों के हाथ चला जाएगा, फिर हिंदू मुसलमान मिलकर उनके खिलाफ लड़ाई लड़ेंगे। विदेशी यहाँ से चले

तो जाएँगे पर हिंदुस्तान को टुकड़ों में बाँट जाएँगे। दोनों ही देश बन जाएँगे और परस्पर इतनी शत्रुता बढ़ जाएगी कि दोनों में युद्ध का तनाव तब तक बना रहेगा, जब तक मुसलमान भू-भाग पूरी तरह पराजित नहीं हो जाएगा।

तृतीय विश्व युद्ध के संबंध में बली साहब ने लिखा है, 'यह युद्ध बड़ा भयंकर होगा। श्वेत जातियाँ बहुत कमजोर पड़ जाएँगी। भारत का अभ्युदय एक सर्वोच्च शक्ति के रूप में हो जाएगा, पर उसके लिए उसे बहुत कठोर संघर्ष करने पड़ेंगे। देखने में यह स्थिति कष्टकारक होगी, पर इस देश में एक फरिश्ता आएगा, जो हजारों छोटे-छोटे लोगों को इकट्ठा करके, उनमें इतनी हिम्मत पैदा कर देगा कि वहीं नन्हें-नन्हें लोग ऐसी परिस्थितियाँ पैदा कर देंगे, जिससे संसार में सीधे-सच्चे लोगों की प्रतिष्ठा बढ़ेगी और अमन चैन फैलता चला जाएगा।

मिश्र की एक बहुत प्राचीन मीनार पर एक भविष्यवाणी अंकित है, जिसमें कहा गया है कि चौदहवीं सदी बीत जाने पर (हिजरी सन् के अनुसार चौदहवीं सदी अब बीत चुकी है) कयामत आएगी अर्थात् भीषण विनाश और संघर्ष उत्पन्न होगा, इसी मीनार पर जल्द ही एक नया जमाना आने की बात भी लिखी है, जिसमें सत्य ही धर्म होगा, न्याय ही कानून होगा, सारी पृथ्वी के लोग एक परिवार की तरह रहेंगे तथा कोई किसी के साथ बैर-भाव नहीं रखेगा। सब ओर सुख-शांति रहेगी, किंतु इससे पहले भयंकर युद्ध, अकाल और प्राकृतिक प्रकोप इतने सघन होंगे कि संसार की आबादी का एक बड़ा भाग नष्ट-भ्रष्ट हो जाएगा। इस नये युग का आरंभ थोड़े-से लोगों के द्वारा किये जाने की भविष्यवाणी भी उस मीनार पर अंकित है।

विश्व में जहाँ-जहाँ भी युग-परिवर्तन अथवा युग संधि से संबंधित साहित्य मिलता है, उसका विवेचन करने पर यही समय युग संधि का ठहरता है अर्थात् प्राचीनतम ग्रंथों और मनीषियों के अनुसार सन् १९८० से लेकर सन् २००० तक के वर्ष विश्व में भारी उथल-पुथल और हलचल से भरे हैं।

❐ ❐

अगले दिनों की विनाशकारी संभावनाएँ

पिछले पृष्ठों पर कुछ विश्वविख्यात दिव्य दृष्टाओं के भविष्य कथन प्रकाशित किए गए हैं। उनके अतिरिक्त भी कई लोग ऐसे हैं जो भले ही उतने चर्चित न हों, परंतु शत-प्रतिशत सही भविष्यवाणियाँ करते रहे हैं। नार्वे के प्रसिद्ध योगी आनंदाचार्य, आर्थर, चाल्स क्लार्क, जोन एडन तथा हयूम टेलर भी अपने सही भविष्य कथनों के कारण अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित हो चुके हैं।

योगी आनंदाचार्य तो भारत में ही जन्मे हैं। सन् १८८२ में बंगाल में उनका जन्म हुआ। तब उनका नाम सुरेंद्रनाथ वाराल था। उनका कथन है कि जिस तरह महाभारत युद्ध चरम वैज्ञानिक प्रगति के बाद भारतवर्ष में लड़ा गया, उसमें विश्व के सभी देश सम्मिलित हुए और आग्नेय शास्त्रों से लेकर, अलौकिक दिव्य अस्त्रों का प्रयोग हुआ था, उसी प्रकार अगले तृतीय विश्व युद्ध में भी भयंकर धातुओं वाले अणु आयुधों का प्रहार तो होगा ही, ऐसे अस्त्र-शस्त्रों का भी प्रयोग होगा, जिनकी मारक क्षमता की विलक्षणता की तुलना धरती का कोई भी परमाणु बम तक न कर सकेगा, पर प्रहार के बाद उनका चिह्न तक पृथ्वी में ढूँढ़ने पर भी न मिलेगा। इस युद्ध में स्त्रियाँ भी भाग लेंगी।

योगी आनंदाचार्य को यह अद्‌भुत क्षमता योग साधना के परिणामस्वरूप ही प्राप्त हुई है, कलकत्ता विश्वविद्यालय के भारतीय दर्शन-वैदिक विषयों का गहन अध्ययन करने के कारण उनके जीवन में आध्यात्मिकता के प्रति तीव्र जिज्ञासाएँ तभी जाग्रत हो गई थीं। कुछ दिन तक कलकत्ता विश्व विद्यालय में ही वे शिक्षक का कार्य करते रहे। इस बीच उन्होंने अनुभव किया कि भौतिक आकांक्षाओं में मानवीय सुख-शांति की संभावनाएँ यदि हैं तो उनकी सीमा पहाड़ में राई के बराबर है। जो वस्तुएँ व्यक्ति, समाज और विश्व को शांत और सुखी बना सकती हैं, उनका संबंध व्यक्ति के रूप में उसकी सनातन

शक्ति से है। जब तक विश्व नियामक का स्वरूप, आत्मा का दर्शन लोक-परलोक का ज्ञान और प्राणी मात्र में फैली चेतना का विज्ञान समाज में नहीं आता, तब तक व्यक्ति अपूर्ण है और अपूर्णता की स्थिति में न तो मनुष्य सुखी रहा और न ही आगे रह पाएगा।

इसलिए पूर्णयोग की प्राप्ति एक स्थिर लक्ष्य और सच्ची शक्ति देने वाली है, यह विचार कर उन्होंने योगाभ्यास प्रारंभ किया। ग्रह-गणित के अध्ययन से लेकर समाधि अवस्था तक पहुँचने की यौगिक प्रणाली का गहन अभ्यास उन्होंने किया। पीछे उन्होंने अपना नाम आनंदाचार्य रख लिया था, जन्म उनका भारत में हुआ था, साधना उन्होंने नार्वे में की, पर भारतीय दर्शन का प्रचार सारे विश्व में किया। न्यूयार्क और लंदन से प्रकाशित उनकी पुस्तकों 'ब्रह्म दर्शन' 'तत्त्व जीवनम' तथा 'भारतीय दर्शन का ख्यातिपूर्ण कार्यक्रम' में उन्होंने भारतीय समाज की वर्तमान अवस्था और उसके भावी निर्माण का जो स्वरूप कई शताब्दियों पूर्व लिखा था, वह आज स्पष्ट सत्य होता दिखाई दे रहा है।

आनंदाचार्य पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने १९१० में ही बता दिया था कि चार वर्ष बाद लोग विश्वयुद्ध (प्रथम) के लिए तैयार रहें। जुलाई की आखिरी तारीखों में किसी बहुत ही सामान्य घटना को लेकर युद्ध प्रारंभ होगा, पर पीछे विश्व के लिए जिन देशों में परस्पर तनातनी चल रही है, वे सब युद्ध में कूद जाएँगे। युद्ध नवंबर १९१८ तक चलेगा और जब युद्ध समाप्त हो जाएगा तो सारे विश्व की राजनीति एक स्थान पर केंद्रित हो जाएगी। एक ऐसा संस्थान बनेगा, जिसमें विश्व के अधिकांश देश सम्मिलित होंगे, पर उसमें सच्चाई और ईमानदारी के स्थान पर कूटनीति का स्थान अधिक होने से लोग उसके निर्णय बहुत कम स्वीकार किया करेंगे।

तब इस भविष्यवाणी पर लोगों का कोई विशेष ध्यान नहीं गया, १९१४ की बात है कि सर्विया के एक नवयुवक ने वहाँ के आर्कड्यूक फर्डिनेंड को गोली मार दी। आर्कड्यूक आस्ट्रिया राज्य का उत्तराधिकारी था। यह छोटी-सी घटना घटी, तब भी संसार के किसी भी व्यक्ति ने विश्वयुद्ध जैसी कल्पना नहीं की, पर उसके एक दिन बाद आस्ट्रिया ने हंगरी पर आक्रमण कर दिया। फिर क्या था दोनों

ओर से मित्र देश कूदते गए और जर्मनी, तुर्की, वल्गेरिया, फ्रांस, ब्रिटेन, रूस, बेल्जियम, जापान, इटली, अमेरिका आदि सभी देश कूद गये। विश्वयुद्ध हुआ। सोम, माँस और बर्दून की लड़ाई इतनी भयंकर हुई कि युद्ध के प्रति लोगों में घृणा के तीव्र भाव पैदा हो गये। उसी का परिणाम हुआ कि राष्ट्र संघ (लीग आफ नेशन्स) की स्थापना हुई। इस तरह दोनों भविष्यवाणियाँ अक्षरशः सिद्ध हुईं।

अब नार्वे और इंगलैंड वालों का ध्यान आनंदाचार्य की ओर गया, उनसे ब्रिटेन का एक पत्रकार मंडल विशेष रूप से मिला और भावी विश्व पर अपने विचार देने का आग्रह किया। तब उन्होंने कहा—अति शीघ्र ही एक और विश्वयुद्ध के लिए तैयार रहिए। इस द्वितीय विश्वयुद्ध में जर्मनी का हिटलर और रूस के स्टालिन जिस भयंकरता से कूदेंगे युद्ध का अंत उससे भी भयंकर होगा। अगस्त १९४५ में संसार में पहली बार एक भयंकर धमाका होगा, लाखों एक क्षण में मारे जाएँगे, तभी जाकर शांति समझौता होगा।

इस भविष्यवाणी के कुछ वर्षों बाद ही सितंबर १९३९ में पोलैंड पर जर्मनी ने आक्रमण कर दिया और इस युद्ध के बाद उसकी ज्वालाएँ भड़कती ही गई और फिर एक विश्वयुद्ध भड़का। इसी युद्ध में ८ अगस्त १९४५ की प्रातः ही हिरोशिमा नागासाकी (जापान) में अणुबम गिराए गए, जिससे एक लाख से भी अधिक व्यक्तियों की मौत हुई।

मुसोलिनी की मृत्यु, आइजनहावर और ख्रुश्चेव के प्रभुत्व की भी उनकी भविष्यवाणियाँ सच निकलीं और द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद उन्होंने जिन परिस्थितियों का वर्णन किया था, वह भी सच निकलीं। इसके बाद अष्टग्रही योग आया। उस समय उन्होंने जो कुछ कहा वह लेख की प्रारंभिक पंक्तियों में कहा गया है, पर उसका सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण भाग वह है, जो उन्होंने न्यूयार्क में कहा और बाद में उसे न्यूयार्क, पेरिस, बेल्जियम, इंगलैंड और नार्वे आदि कई देशों में छापा गया।

उन्होंने बताया कि एक ओर दुनियाँ भर के वैज्ञानिक भौतिक विज्ञान में यहाँ तक प्रगति करेंगे कि चंद्रमा की यात्रा से लेकर मंगल तक की यात्रा संभव होगी। परमाणु परीक्षणों पर प्रतिबंध के

राजनैतिक प्रयत्न तीव्र होंगे, पर छोटे-छोटे देश परमाणु बम बनाने के लिए प्रयत्नशील होंगे। कम से कम समय में दूर-दूर तक मार करने वाली मशीनों और बमों का निर्माण होगा। दुनियाँ के दूसरे देशों में बसे भारतीयों पर संकट आएँगे। कई देशों से तो उन्हें अपमानित होकर निकलना पड़ेगा। लंका और भारत में महिलाएँ शासन प्रभुत्व में आएँगी। इंग्लैंड की राजनीति में जल्दी-जल्दी परिवर्तन होंगे। केनेडी और लूथरकिंग की हत्या की उनकी भविष्यवाणियाँ सत्य हुईं।

"धर्म" मेरे देश में संगठित संस्था का रूप लेकर पनपेगा। जन्म तो उसका स्वतंत्रता के साथ ही हो जाएगा, पर २४ वर्ष बाद १९७१ में वह एक शक्तिशाली संगठन के रूप में सारे भारतवर्ष में प्रकाश में आ जाएगा। एक ओर विश्व राजनीति में व्यापक हलचलें होती रहेंगी और उनमें भारतीय राजनीति प्रमुख रूप से क्रियाशील होती दिखाई देगी। वह संगठन जो धार्मिक उद्धार के रूप में प्रकट होगा, इस बीच विश्व कल्याण का नया नक्शा तैयार करेगा। इस संगठन का स्वामी संचालक कोई गृहस्थ व्यक्ति होगा और अब तक दुनियाँ के सबसे बड़े विचारक के रूप में ख्याति प्राप्त करेगा। वह व्यक्ति सामाजिक उत्तरदायित्वों से लेकर-संसार के सब देश शांतिपूर्वक कैसे रहें, उसकी एक व्यवस्थित आचार संहिता तैयार करेगा। उसके जीवन भर के संग्रहीत विचारों को यदि एक पुस्तक में लिखा जाए तो वह पुस्तक १०० पौंड वजन से अधिक होगी। उस समय तो लोग आश्चर्य करेंगे कि आज के भौतिक युग में इन विचारों का क्या उपयोग ? पर संसार पर व्यापक रूप से पड़ने वाली आपत्तियाँ और संसार में छाई वर्तमान भौतिकता की दशा को मोड़ देगा, तब यह आचार संहिताएँ वेद, बाइबिल, एंजील की तरह पूजी जाएँगी। आज लोगों में जो तत्परता भौतिक प्रगति की दिशा में दिखाई दे रही है, तब लोग लोक-परलोक, आत्मा-परमात्मा, मोक्ष और सद्गति जैसे आध्यात्मिक तत्त्वों के प्रति वैसी ही तत्परता दिखाएँगे। महाभारत के पूर्व भारत की जो स्थिति थी, उससे आगे का विकास कार्य इस के बाद होगा और उसका संतुलन यह नया धार्मिक संगठन करेगा।

चार्ल्स क्लार्क

चार्ल्स क्लार्क की भविष्यवाणियाँ अन्य भविष्यवक्ताओं से भिन्न कोटि की हैं। स्वयं एक वैज्ञानिक और साहित्यकार होने के कारण उनकी भविष्य संबंधी पूर्वोक्तियाँ विज्ञान और मनुष्य के अंतःकरण को छूने वाली भावनाओं को साथ-साथ लेकर हुई हैं। उनकी भविष्यवाणियाँ इतनी स्पष्ट और सत्य सिद्ध हुईं कि पीछे वैज्ञानिकों ने उनके भविष्य कथन को आधार मानकर, प्रयोग भी करने प्रारंभ कर दिए।

१९५६ की शाम एक दावत में उन्होंने अपने मित्रों को बताया—'१९६९ की ३० जून पृथ्वी के इतिहास का सर्वाधिक रोमांचक दिन होगा। मैं स्पष्ट देख रहा हूँ कि कोई पृथ्वीवासी उस दिन चंद्रमा पर उतर जाएगा।"

उन्होंने जिस दिन यह भविष्यवाणी की थी, तब तक अंतर्ग्रही प्रक्षेपण की एक भी घटना घटित नहीं हुई थी। इससे ठीक दो वर्ष पीछे १९६१ में पहली बार रूसी वैज्ञानिकों ने यूरी गागरिन को अंतरिक्ष में भेजकर पृथ्वी की प्रदक्षिणा कराई थी। इसलिए मित्रों को उनकी बात पर विश्वास नहीं हुआ, पर सारे संसार ने देखा कि पिछले वर्ष उनकी दस वर्ष पूर्व की गई भविष्यवाणी कुल २० दिन के अंतर से सिद्ध हो गई। १९६९ में अमेरिका का एक अपोलो केप-कैनेडी में ही जलकर नष्ट नहीं हो गया होता तो संभवतः यह २० दिन का भी अंतर न पड़ता।

चार्ल्स क्लार्क छोटे थे तभी से उनमें अतींद्रिय ज्ञान और पूर्वाभास की विचित्र क्षमता उत्पन्न हो गई थी। वह कहा करते थे—मनुष्य शरीर नहीं, एक शक्ति है। उस शक्ति में प्रकाश है, तेजस्विता है और वे सब क्षमताएँ हैं, जिनकी मनुष्य भगवान में अपेक्षा किया करता है। मानव-अंतःकरण की वही शक्ति अभी सोई पड़ी है, पर मैं यह देख रहा हूँ—एशिया के किसी देश (भारत वर्ष की ओर संकेत कर) से कुछ ही दिनों में एक प्रचंड विचार क्रांति उठने वाली है। वह १९७१ तक उस देश और उसके १० वर्ष बाद सारे विश्व में इस तरह गूँज जाएगी कि मानव का सोया अंतःकरण जागने को विवश हो जाएगा। आज जिन पंक्तियों की ओर लोगों का

ध्यान भी नहीं जाता, तब वह शक्तियाँ जन-जन की शोध और अनुभूति का विषय बन जाएँगी। विज्ञान एक नया मोड़ लेगा, जिसमें आध्यात्मिक तत्त्वों की प्रचुरता होगी। सारे ब्रह्मांड को एक नए सूत्र में बाँधने का आधार यह आध्यात्मिक सिद्धियाँ और सामर्थ्य ही होगी।'

लोगों ने तर्क प्रस्तुत किया कि जीवन का अस्तित्व तो केवल पृथ्वी में है। वैज्ञानिक भी कहते हैं कि अन्य ग्रह जीव रहित हैं। इस पर उन्होंने कहा—"मैंने १९४४ में कहा था कि सारी पृथ्वी समुद्र को तारों से पाटने की जरूरत नहीं। यदि कोई कृत्रिम उपग्रह १७००० मील की गति से अंतरिक्ष में उड़ा दिया जाए और पृथ्वी की परिक्रमा करता रहे तो वह बेतार के तार वाले संदेश पहुँचाने की आवश्यकता को पूरी कर देगा। तब लोगों को मेरी बात हँसी जैसी लगी, किंतु १९६२ में वेल टेलीफोन कंपनी ने 'टेलस्टार' नामक उपग्रह छोड़कर मेरे कथन की सत्यता सिद्ध कर दी। अब तो अलीवर्ड और टालराम जैसे भू-संचार उपग्रह भी बन गए हैं, जो एक स्थान से पृथ्वी के दूसरे स्थान तक १ मिनिट में १७ अखबारी पेजों के बराबर संदेश भेज सकते हैं।

एक बार मैंने कहा था—मनुष्य छोटे से छोटे अणु (अणु) से इतनी शक्ति उत्पन्न करने में सक्षम हो जाएगा जो कुछ ही मिनिट में संसार को नष्ट-भ्रष्ट कर डालने की क्षमता से ओत-प्रोत होगी। तब लोगों ने मेरी बात का विश्वास नहीं किया, पर जब नागासाकी और हिरोशिमा कांड हो गये, तब लोग मेरी बात मान गये, यह भविष्यवाणियाँ मैंने जिस दृढ़ता और आत्म-विश्वास के साथ की है, उसी आत्म विश्वास के साथ मैं आज भी कहता हूँ कि वह सृष्टि कर्त्ता रहित नहीं। एक रहस्यमय चेतना शक्ति है जिसके आगे मानवीय बुद्धि, मानवीय योग्यताएँ नगण्य हैं। विराट सृष्टि का निर्माण उसी की इच्छा से होता है। यदि उसने पृथ्वी पर जीवन उत्पन्न किया है तो कोई कारण नहीं कि अन्य ग्रह भी अपवाद न हों। यदि अन्य ग्रहों में जीवन हुआ तो इनमें रत्ती भर संदेह नहीं कि वे सब पास-पास आएँ और अपनी समस्याओं के समाधान के सार्वभौमिक नियम तय करें।

श्री क्लार्क की भविष्यवाणियों में भी भारतवर्ष की उन्नति की वह बातें आती हैं, जो श्रीमती डिक्सन, कीरो, एंडरसन आदि ने कही

हैं। उनका कथन है कि भारतवर्ष ने अतीत में अपनी आध्यात्मिक उन्नति के रूप में ही नहीं एक महान वैज्ञानिक देश के रूप में भी गौरव अर्जित किया है। मैंने सुना है कि यहाँ कई तरह के आग्नेयास्त्र, वरुणास्त्र और अनेक गगनगामी विमानों के भी अनुसंधान हो चुके हैं। आगे भी यह देश इस तरह की उन्नति करेगा और इस दौड़ में दुनियाँ के तमाम देशों को पछाड़ देगा पर मूलतः इसकी ख्याति और विश्व प्रतिष्ठा का आधार यहाँ का धर्म और दर्शन होगा। विश्व-धर्म के रूप में भारतीय धर्म और संस्कृति को ही स्थान मिलेगा।

उनकी भारतवर्ष की स्वतंत्रता, चीन और पाकिस्तान की मैत्री, रूस और चीन की युद्ध संबंधी भविष्यवाणियाँ नितांत सत्य हो गयी हैं। थोड़े दिनों का कभी हेर-फेर हुआ हो वह अलग बात है। फिर यदि सन् २००० से पहले सारी पृथ्वी में एक अनोखी विचारक्रांति और युग परिवर्तन जैसी उनकी यह भविष्यवाणी सत्य हो तो इसमें संदेह नहीं है, क्योंकि आज की परिस्थितियों का झुकाव भी कुछ वैसा ही है।

चार्ल्स क्लार्क ने १६८० से सन् २००० तक विश्व परिस्थितियों के संबंध में जो भविष्य कथन किए हैं, वे पूर्वोक्त भविष्यवाणियों से ही मिलती-जुलती हैं अर्थात् इस अवधि में उन्होंने विश्व युद्ध की संभावना तो सुनिश्चित बताई ही है, इस बीच भयंकर बीमारियाँ फैलने, सूखा पड़ने और अनावृष्टि होने जैसे संभावनाएँ भी व्यक्त की हैं।

महात्मा रामचंद्र

महात्मा रामचंद्र भी अपनी सफल भविष्यवाणियों के लिए विख्यात हैं। 'राष्ट्रधर्म' के जनवरी १६७१ अंक में उनका एक लेख प्रकाशित हुआ था। इस लेख में बिहार प्रदेश के व्यापक रूप से जलमग्न और क्षतिग्रस्त होने की भी भविष्यवाणी की थी। उस समय तक ऐसा कोई लक्षण नहीं था, जिससे तत्काल यह मान लिया जाता है कि वस्तुतः ऐसा होगा, किंतु बाद में सचमुच दो समुद्री तूफान आए और पूर्वी पाकिस्तान के २० लाख लोगों को नष्ट करके रख गये। आज भी वहाँ की प्रलय विभीषिका समाप्त नहीं हुई। जब होगी

तब पूर्वी पाकिस्तान प्रलय के बाद वाले शांत और सुसंस्कृत सभ्य समाज वाले देश के रूप में दिखाई देगा। बिहार के संबंध में की गई भविष्यवाणी की सत्यता भी स्पष्ट देखी जा सकती है। यह पंक्तियाँ जिस समय लिखी जा रही थी; अधिकांश बिहार बाढ़ की चपेट में फँसा हुआ था, जबकि उसकी भविष्यवाणी १०-११ महीने पहले ही कर दी थी। यह भविष्यवाणी शाहजहाँपुर के एक सुप्रसिद्ध योगी और संत महात्मा रामचंद्र ने की थी।

"संसार में जब भी कोई देवदूत आया, अवतार हुआ तब-तब प्रकृति ने उनके निर्माण के पूर्व की अवस्था को ध्वंस करने में सहयोग अवश्य दिया है। वह महासंघर्ष की भूमिका इसी शताब्दी के अंत तक निश्चित रूप से घटित हो जानी चाहिए। परिवर्तन का समय आ गया है, जो अब टल नहीं सकता। ईश्वरीय सत्ता मानवीय रूप में अपनी परम प्रिय 'स्वर्गादपि गरीयसी' धरती पर भारतवर्ष में जन्म ले चुकी है और अपना काम करने में लगी हुई है। जब उसकी तमाम योजनाएँ और क्रिया-कलाप सामने आएँगे, तब लोगों को पता चलेगा और पश्चात्ताप भी होगा कि भगवान राम, श्रीकृष्ण, भगवान बुद्ध और परशुराम की तरह का अवतार हमारे समय में आया और हम उन्हें पहचान भी न सके, सहयोग देना तो दूर की बात रही।

यह शब्द भी उन्हीं महात्मा रामचंद्र के हैं, जिनकी भविष्यवाणियों का इन पंक्तियों में उल्लेख किया जा रहा है। ये किसी प्रकार के यश लोकेषणा की कामना के बिना एक सच्चे योगी के समान आत्म-कल्याण और लोकमंगल में रत रहते हैं। यह भविष्यवाणी तो उनकी इस प्रेरणा का प्रतीक समझी जानी चाहिए कि जाग्रत आत्माएँ, यदि उनका विवेक साथ देता हो तो विद्यमान देवदूत को पहचानें और उनके नव निर्माण के महासंघर्ष में हनुमान, नल-नील अंगद की तरह मुक्ति-वाहिनी का सेनापतित्व करने के लिए आगे आएँ।

कुछ शंकालु व्यक्तियों ने महात्मा रामचंद्र से प्रश्न किया कि परमात्मा तो सर्वव्यापी सत्ता हैं, तत्त्व रूप में हैं, वह अवतार कैसे ले सकता है ? इस पर उन्होंने समझाया—हर व्यक्ति में एक अचेतन तत्त्व काम करता है, उसे सांसारिक कार्य-कलाप के लिए मन भी

मिला है। अचेतन मन (अतींद्रिय जगत का अधिष्ठाता) तन प्रत्यक्ष जगत का कारण है। मन से ही योजनाएँ बनती और फिर क्रियान्वित होती हैं। परमात्मा में 'मनस' शक्ति नहीं होती है, पर मनुष्य जाति के उद्‌बोधन और मार्गदर्शन के लिए तो यह शक्ति ही आवश्यक है। इसलिए अदृश्य चेतना के रूप में काम करने वाली सत्ता को मन में परिपूर्ण होने के लिए किसी शरीर में व्यक्त होना पड़ता है। शरीर में होने पर भी उसकी शरीर में कोई आसक्ति नहीं होती अर्थात—काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि मनोविकार उसका कुछ नहीं कर पाते। वह भूत भविष्य, सब कुछ जानने वाला होने पर भी अन्य मनुष्य की तरह ही काम करने वाला होता है, किंतु उसका अतींद्रिय ज्ञान और बल एवं मनोबल इतना प्रचंड और प्रखर होता है कि संसार का कोई भी दुस्तर से दुस्तर कार्य उसके लिए असंभव अशक्य नहीं होता। ऐसी ही दिव्य सत्ता भारतवर्ष में अपना काम कर रही है, बहुत शीघ्र ही उसे लोग पहचानेंगे।

अपनी इस भविष्यवाणी में ही महात्मा रामचंद्र ने जहाँ इस दिव्य सत्ता की प्रचंड सामर्थ्य का दिग्दर्शन करा दिया, वहाँ लोगों की पहचान के लिए मानो संकेत भी दे दिया है। उनकी भविष्यवाणी का यह अंश बार-बार पढ़ने और मनन करने योग्य हैं। सूर्य की गर्मी पिछले कुछ समय से कम हो रही है। वैज्ञानिक हैरान हैं कि सूर्य के इस ह्रास का कारण क्या है ? वे इस कारण चिंतित हैं कि सूर्य की ऊर्जा व गर्मी समाप्त हो जाने से सारे भौतिक साधन होने पर भी मनुष्य जाति का अस्तित्व संकट में पड़ सकता है और उससे बचने का उपाय उनकी समझ में नहीं आ रहा है।

सूर्य की शक्ति के इस असाधारण ह्रास पर प्रकाश डालते हुए योगाचार्य लिखते हैं कि यह ह्रास मनुष्य के रूप में इस महान ईश्वरीय सत्ता द्वारा उसका उपयोग है। प्रकृति जो परिवर्तन करती है, वह सूर्य के परिवर्तन से ही आरंभ होता है, क्योंकि दृश्य जगत की आत्मा सूर्य ही है। तीव्र ह्रास का तात्पर्य यह है कि जो परिवर्तन होना है वह जल्दी ही हो जाए। इस शक्ति का उपयोग भगवान द्वारा नियुक्त यह अवतार ही कर रहा है। जैसे ही कार्य पूरा हुआ और प्रकृति ने अपनी नई व्यवस्था का क्रम जमा लिया, सूर्य फिर से

अपनी पूर्व प्रखरता पर आ जाएगा (पाठकों को यह स्मरण दिलाना समयोचित ही होगा कि गायत्री उपासना का सीधा संबंध सूर्य से है)। गायत्री सिद्ध हुए आत्मदर्शी पुरुष और सूर्य में कोई अंतर नहीं, होता दोनों ^तदाकार हो जाते हैं। अतएव यह निर्विवाद सत्य है कि यह नया अवतार महान सावित्री शक्ति—गायत्री तत्त्व और सूर्य शक्ति का सिद्ध होगा। यह स्पष्ट संकेत है नये निर्माण की पहचान का।

प्रसिद्ध भविष्य-वक्ता श्री रामचंद्र इस बात से पूर्णतया सहमत हैं कि आज का बुद्धिवाद और नास्तिकता, धर्म और अध्यात्म के प्रति उत्कृष्ट आस्था में बदल जाएँगे। उसके लिए जो ईश्वरीय सत्ता उदित हुई और काम कर रही है, वह अहंभाव से पूर्णतया मुक्त होगी। शरीर में होने पर भी वह नितांत भावनाओं से बनी एक प्रकार की भाव प्रतिमा होगी—अर्थात वह मानवी मन न होकर ईश्वरीय मन होगी, जो सैकड़ों लोगों की सहायता करती हुई युग-प्रत्यावर्तन प्रक्रिया को पूरा कर रही है।

यह भविष्यवाणी केवल कौतूहल के लिए नहीं है, अतींद्रिय दृष्टा की प्रेरणा को समझा जाना चाहिए और यदि मन किसी ईश्वरीय दिव्य सत्ता के अस्तित्व को स्वीकार करता हो तो उसकी सहायता के लिए साहस भी प्रदर्शित किया ही जाना चाहिए।

जौन एडम

एक प्रामाणिक भविष्य वक्ता के रूप में जर्मनी के जौन एडम को विश्व ख्याति मिली है। वहाँ की पत्रिका 'एक्सप्रेस रिन्यू' के जनवरी ७८ अंक में प्रकाशित उनकी भविष्यवाणी उल्लेखनीय है। कुछ व्यक्ति उनसे संसार का भविष्य जानने के लिए पहुँचे। पूछने पर उन्होंने निराशापूर्ण शब्दों में कहा कि "इस संबंध में हमसे न पूछा जाए तो ही अच्छा होगा।" अधिक आग्रह करने पर उन्होंने उत्तर दिया कि "इन दिनों प्रकृति के अंतराल में, मैं असामान्य परिवर्तनों को देख रहा हूँ। ध्यान की गहराईयों में पहुँचने पर मुझे स्पष्ट दिखाई पड़ता है कि प्रकृति ध्वंस का सरंजाम जुटाने में लगी है। ध्वंसात्मक तत्त्व इन दिनों सूक्ष्म जगत में बढ़ते जा रहे हैं। मेरी अंतःचेतना में संसार के नष्ट होने के स्पष्ट संकेत मिल रहे हैं।" यह पूछे जाने पर कि दुर्भाग्यशाली समय कौन-सा होगा ? कुछ देर के लिए शांत होकर वे

आँखें बंद करके बैठ गये। थोड़े समय पश्चात उन्होंने कहा—'हमें जो संकेत मिल रहे हैं, उनके अनुसार यह समय फरवरी और अगस्त ८२ के मध्य होना चाहिए। विनाश का भावी स्वरूप स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि मानवी दुर्बुद्धि एवं उसके कुकृत्यों के कारण प्रकृति-अत्यंत क्रुद्ध है। फलस्वरूप सन् ८२ के फरवरी और अगस्त के मध्य विश्व का अधिकांश भाग भयंकर भूकंप झंझावात और तूफान तथा विस्फोट से नष्ट हो सकता है। इसी समय दो प्रभावशाली राष्ट्रों के बीच युद्ध छिड़ जाने के कारण तृतीय विश्व युद्ध की पूरी-पूरी संभावना है। ये राष्ट्र कम्युनिस्ट होंगे। तृतीय विश्व युद्ध एवं प्रकृति प्रकोपों की दोहरी मार से जिस विदारक दृश्य की कल्पना हमारी चेतना में उठती है, उसे देखकर हमारा हृदय काँप उठता है।"

'जौन एडम' ने अब तक जितनी भी भविष्यवाणी कीं, उनमें अधिकांशतः सही उतरी हैं। जिस समय भारत और पाकिस्तान की सेनाएँ बँगला देश के युद्ध में एक-दूसरे के सामने डटी नर-संहार कर रही थीं, युद्ध विराम के एक दिन पूर्व उन्होंने अपने मित्र से कहा कि कल पाकिस्तानी-सेना आत्म-समर्पण कर देगी। भारत विजयी होगा। बंगला-देश पाकिस्तान के हाथों से निकलकर एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में उभरेगा। दूसरे दिन जब पाकिस्तानी सेना ने आत्म-समर्पण किया तो 'एडम' का मित्र आश्चर्यचकित रह गया। उनकी अतींद्रिय-सामर्थ्य से उसने जन-मानस को अवगत कराया, तब से लेकर अब तक संसार के विभिन्न देशों के संबंध में जो भविष्य वाणियाँ की हैं, वे अधिकांशतः सही उतरी हैं। अरब-इजरायल युद्ध में, अरब राष्ट्रों की गठजोड़ के बावजूद भी इजराइल की अप्रत्याशित विजय की घोषणा, भारत में ऐतिहासिक, राजनैतिक परिवर्तन, पाकिस्तानी शासन में भुट्टो की तानाशाही का दुःखद अंत जैसी भविष्यवाणियाँ समय एवं तत्त्वों के अनुसार सही पाई गई हैं।

यह पूछे जाने पर कि क्या भावी विनाश से बचने का कोई मार्ग है ? उन्होंने कहा कि चेतना की सामर्थ्य प्रकृति की तुलना में जबरदस्त है। प्रकृति के नियमों से मुक्त चेतना उसमें आवश्यक परिवर्तन कर सकने में समर्थ होती है। ऐसा ही प्रचंड आत्म-बल संपन्न महामानव जन-कोलाहल से दूर भावी संकटों से मानव-जाति

की सुरक्षा के लिए प्रयत्नशील है। वह प्रकृति में आवश्यक हेर-फेर कर सकने में समर्थ है। उसकी आध्यात्मिक शक्ति सभी भौतिक शक्तियों से अधिक है। प्रकृति के अनुकूल एवं जनमानस को सही मार्ग पर चलाने में वह अपनी शक्ति का नियोजन कर रहा है। सूर्य की प्रकाश किरणों के माध्यम से वह अपनी सूक्ष्म शक्ति द्वारा भावनाशील व्यक्तियों को अभिप्रेरित करने में संलग्न है। उसमें अद्‌भुत संगठन बल है, जिसके कारण उसके संरक्षण में संसार को दिशा देने के लिए एक दृढ़ संगठन-शक्ति उभर रही है। उसके लाखों अनुयायी प्रचंड एवं विवेक युद्ध विचारों द्वारा जन-मानस में लोक-मंगल की भावना उत्पन्न कर रहे हैं। उसके तर्क युक्त एवं विज्ञान सम्मत आध्यात्मिक विचारों के समक्ष नास्तिक वर्ग भी नत-मस्तक होगा। उस महामानव के जीवन में २४ अक्षर का विशेष महत्त्व होगा। वह २४ महाशक्तियों का अधिष्ठाता होगा। जीवन के उत्तरार्द्ध में वह अपनी शक्ति का विकेंद्रीकरण विभिन्न केंद्रों के माध्यम से करेगा। इस समय उस दिव्य मानव को भारत के उत्तराखंड में कहीं किसी पहाड़ी तीर्थस्थान पर विश्वव्यापी परिवर्तनों के कार्यों में तल्लीन होना चाहिए। उसके मानवतावादी विचार एवं कार्यक्रम को अपनाने से ही भावी संकटों को रोका जा सकता है, वहाँ एक ऐसी संस्कृति का बीजारोपण हो रहा है, जो संप्रदाय एवं मजहब की दीवारों को तोड़ती हुई एक मानवतावादी धर्म की स्थापना करेगी।

क्रुम हैलर

मैक्सिको के महान ज्योतिर्विद् आर्नल्ड क्रुम हैलर की अब तक ८८ प्रतिशत भविष्यवाणियाँ सही उतरी हैं।

श्री क्रुम हैलर अपने आप को ज्योतिषी कहलाने की अपेक्षा—कास्माबायोलाजिस्ट (ब्रह्मांड जीवशास्त्री) कहलाना अधिक पसंद करते हैं। ब्रह्मांड जीवशास्त्र की प्रतिष्ठापना भी उन्होंने ही की है। उसकी मान्यता भारतीय दर्शन के सिद्धांत से पूरी तरह मेल खाती है कि जीवन तत्त्व मात्र पार्थिव नहीं अपितु समूचा ब्रह्मांड ही जैव-द्रव्य से ओत-प्रोत हैं। शरीर के किसी भी अंग में पिन चुभे उसकी जानकारी अविलंब मस्तिष्क को होती हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि मस्तिष्कीय चेतना का शरीर से अविच्छिन्न संबंध जुड़ा हुआ

है। ठीक इसी तरह समूचे ब्रह्मांड में सूक्ष्म संचार सूत्र फुटबाल में भरी हवा की तरह आत्मसात रहते हैं, मनुष्य के न केवल तात्कालिक क्रिया-कलाप, अपितु दूरगामी योजनाएँ जिस तरह मस्तिष्क के गर्भ में ताने-बाने बुनती और पकती रहती हैं। ठीक उसी तरह भविष्य में घटने वाली सारी घटनाएँ ब्रह्मांड के उस अविभक्त जैव द्रव्य में तरंगायित होती रहती है। हम कल जो भी कुछ होंगे, उसकी पूर्व भूमिका आज ही बना लेते हैं, यही है भविष्य दर्शन का विज्ञान इसी को कहते हैं—'कास्मोबायोलाजी'। मेरे अंतरंग की कास्मोबायोलाजी उन दृश्यों को फिल्म की तरह मानस पटल पर उतार देती है और मैं भविष्य बता देता हूँ।

इस कथन को चुनौती न भी दी जाए तो भी इस समय आणविक शस्त्रास्त्रों की चल रही भयानक घुड़दौड़ को देखकर और महाशक्तियों के मध्य बिछी कूटनीतिक शतरंज को देखकर कोई भी इस बात से इनकार नहीं कर सकता कि कहीं से भी एक चिंगारी भर फूटने की देर है, बारूद का ढेर इतना विशाल है कि उससे ७० हजार मनुष्यों के बच जाने की बात तो दूर, एक भी व्यक्ति जीवित न बचे तो उसमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए। यह बात तो गणित की तरह निर्विवाद और स्पष्ट समझी जानी चाहिए।

इस कथन के ज्योतिष पक्ष को भी गंभीर दृष्टि के देखने के कुछ स्पष्ट आधार हैं—

(१) हिटलर की सेनाएँ हालैंड, फ्रांस और डेनमार्क को उदरस्थ कर चुकी थी, उस समय कोई कल्पना भी नहीं करता था कि हिटलर को कोई पराजित कर सकेगा। तभी २३ नवंबर १९४५ के अखबारों में छपा कि अब हिटलर की पराजय के नहीं उसकी मृत्यु के भी दिन एक-दो माह से अधिक नहीं और सचमुच सारे संसार ने देखा कि उनकी भविष्यवाणी अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई। उनकी कुछ भविष्यवाणियाँ सितंबर १९७२ की कादंबिनी में भी छपी है।

(२) सन् १९८५ में मैक्सिको में भयंकर भूचाल आने वाला है। तीन वर्ष पूर्व ही जबे उन्होंने इस बात की भविष्यवाणी की तो लोगों ने उन्हें डराने वाला दैत्य तक कहा, पर सचमुच उस वर्ष मैक्सिको

में ऐसा वीभत्स भूचाल आया कि मैक्सिको वासी त्राहि-त्राहि कर उठे।

(३) स्टालिन की मृत्यु, मार्टिन लूथर किंग की हत्या तथा तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू की मृत्यु के लिए उन्होंने जो परिस्थितियाँ बताई थीं, उनकी मृत्यु ठीक वैसी ही हुई। इससे डा० क्रुम हैलर ख्याति के शिखर पर जा पहुँचे।

(४) एक बार वे लास ऐंजिल्स की यात्रा कर रहे थे। उनसे इंटरव्यू के लिए अनेक पत्रकार उनके पास पहुँचे। उस समय उन्होंने ठंडी आह भरते हुए कहा—मित्रो ! मुझे न जाने क्यों परमात्मा ने अशुभ समाचार ही देने को भेजा है। जिस प्रांत में मैं इस समय बैठा हूँ, कुछ ही महीनों बाद यहाँ के ध्वंस और लाशों के ढेर मुझे अभी दिखाई पड़ रहे हैं। उस समय तक उनका भविष्यवक्ता स्वरूप बहुत प्रसिद्ध हो गया था, अतएव समाचार पत्रों में छपी सभी भविष्यवाणियों पर जहाँ कुछ ने मखौल उड़ाया वहाँ अनेकों नागरिकों और सरकारी अधिकारियों ने उस तथ्य को गंभीरता से लिया—उनके इस भविष्य कथन के कुछ ही दिन बाद लास ऐंजिल्स में सचमुच इतिहास का सर्वाधिक रोमांचक भूकंप आया, जिसमें बस्तियाँ उजड़ गयीं। लाखों लोगों की जानें गयीं, पर उनके पूर्वाभास ने लाखों को बचा भी दिया अन्यथा स्थिति इतनी दयनीय होती कि अमेरिका के संभाले न संभलती।

(५) रूस और चीन के मध्य युद्ध और तनाव की भविष्यवाणी करने के बाद उनका सर्वाधिक उपहास हुआ था, पर दो साम्यवादी देशों के मध्य युद्ध और बुरे संबंध आज सारी दुनियाँ देख रही है।

सन १९६१ को अमेरिकी राष्ट्रपति यात्रा पर थे। सुरक्षा के लिए सैकड़ों पुलिस अधिकारी जुटे थे। पुलिस का घेरा तोड़कर क्रुम हैलर उनके पास पहुँच गये और उनके हाथों में एक परचा थमा दिया। कैनेडी ने पर्ची पढ़ी, उनकी ओर देखकर अविश्वास की मुद्रा में मुस्कराये और पर्ची फेंक दीं। घटना का विवरण अखबारों में छपा। लिखा था दो वर्ष बाद २२ नवंबर को आपकी हत्या कर दी जाएगी। पीछे लोगों ने उस भविष्य कथन को सत्य पाया तो उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा।

अगले कई वर्ष में सृष्टि के महाविनाश के पूर्वाभास ही हैं जिन पर लोगों को हँसी आ सकती है। मनुष्य सर्व शक्तिमान नहीं है, उससे भी ऊपर समर्थ सत्ता परमात्मा की है, वह स्वयं नियामक सत्ता विधान बदल भी सकता है, किंतु उसके लिए मानवीय प्रकृति का बदलना भी आवश्यक है। अंधाधुंध अपराध करने वाला सजा से बचेगा ? यह मात्र दुराशा है यदि वह प्रायश्चित्त के लिए तैयार हो, तब यह संभव है कि उसकी दंड प्रक्रिया सह्य और सरल बना दी जाए। महाविनाश से बचने के लिए मानवी आस्थाओं का परिवर्तन आवश्यक है। इन दिनों हो रही स्वार्थ भोगवादी घुड़दौड़ रोकी जाए, मनुष्य की उच्छृंखलता पर रोक लगे, विलासिता का स्थान प्रकृतिस्थ जीवन ग्रहण करे। मर्यादाओं का उल्लंघन रुके तो संभव है इस ईश्वरीय दंड से कुछ विमुक्ति मिले अन्यथा सृष्टि के विनाश की संभावना तो चर्म-चक्षुओं से ही देखी जा सकती है।

आर्नाल्ड क्रुम हैलर की इस समीक्षा का भविष्य क्या है ? लोगों ने उन से प्रश्न किया तो उन्होंने उत्तर दिया—महाविनाश अवश्यंभावी है, किंतु मानव जाति का लोप हो जाएगा, ऐसा नहीं। उन्होंने कहा—हमारे पुरखों की आद्य संस्कृति को नया जन्म मिलने वाला है। यह स्मरणीय है कि मैक्सिको किसी समय में संस्कृति का घर रहा है। 'मय सभ्यता' वहाँ भारतवर्ष से गई है। महायुद्ध की विभीषिकाएँ ही विकसित नहीं हो रही, पवित्रता, समता, करुणा, उदारता, न्याय, नीति, मैत्री और विश्व-बंधुत्व वाली शक्तियाँ भी अवतरित हो चुकी हैं। विश्व की तुलना में वह यद्यपि अभी शिशु जैसी और गहन अंतराल में है—वहाँ श्रद्धा और विश्वास की शक्ति कार्य कर रही है तथापि वह परमाणु से भी अति समर्थ है और अंत में इसी महाशक्ति की सांस्कृतिक पौध सारी दुनियाँ में वितरित होगी, रोपी जाएगी, पुष्पित पल्लवित होगी और इस तरह शांति, प्रगति और प्रसन्नता की एक नई फुलवारी दुनियाँ में लहलहाएगी।

सन् १९७२ में उन्होंने कुछ भविष्यवाणियाँ इस प्रकार की थीं—

(१) अफगानिस्तान में दो बड़ी समस्याएँ—अंतर्क्रांति और सैनिक शासन।

(२) पाकिस्तान में प्रजातंत्र का सदा के लिए अंत।

(३) भारतवर्ष में सत्ता-परिवर्तन भयंकर प्राकृतिक प्रकोप जो सन् १९८२ तक प्रतिवर्ष और अधिक उग्र होते चले जाएँगे—यही वह देश है, जिसके प्रताप से महायुद्ध की उग्रता शांत होगी, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारतवर्ष विश्व का शिरोमणि बनेगा।

(४) कैलीफोर्निया में भयंकर भूचाल और उसका बहुत भाग पृथ्वी में समा जाएगा।

(५) भारतवर्ष और रूस की अटूट मैत्री और साम्यवादी रूस का धार्मिक देश के रूप में परिवर्तन।

(६) इंग्लैंड में भयंकर मुद्रा संकट।

(७) चीन में भयंकर गृहयुद्ध—जिससे बचने के लिए चीन द्वारा विश्व युद्ध प्रारंभ करने का पलीता।

इनमें से अनेक भविष्यवाणियों को लोग सत्य हुआ देख भी चुके हैं। श्री क्रुम हैलर एक ऐसे ज्योतिर्विद हैं, जिनकी भविष्यवाणियों की कतरनें पश्चिमी देशों में अनेक पत्रकार अपनी संपत्ति की तरह फाइलों में सुरक्षित रखते हैं। "हैरिऐट" के संवाददाता—जान मिलर जो कई बार भारतवर्ष की यात्राएँ कर चुके हैं—का कथन है कि उनके पास क्रुम हैलर की एक ऐसी भविष्यवाणी है, जिसको उन्होंने अपनी अंतिम भविष्यवाणी बताया है—यह भारतवर्ष से संबंधित है और इसीलिए मैंने भारतवर्ष विशेषकर उत्तराखंड हिमालय की कई बार यात्राएँ की हैं। बहुत पूछने पर वे इतना ही बताते हैं कि इसका संबंध उस महाशक्ति से है, जिसे क्रुम हैलर इस युग की एक बहुत बड़े चमत्कार की संज्ञा दिया करते थे और कहा करते थे धार्मिक आस्थाओं के कारण लोग राजकीय-वैभव तक का परित्याग कर देते हैं। यह बात युद्ध के इतिहास में तो मिलती है, पर उसकी पुनरावृत्ति इस युग के लोग अपनी आँखों से देखेंगे। यही वह आदर्श है, जो इस महाविनाश का शमन करेंगे अन्यथा आगामी विश्व युद्ध में पूर्ण प्रलय तक की आशंका है।

वर्तमान परिस्थितियों और भविष्य की संभावनाओं के संबंध में उनका कथन है कि "इस संबंध में मेरे पास एक बहुत ही अशुभ समाचार है। जो बात मैं पूरे आत्मविश्वास से करता हूँ, समझना चाहिए, वह अवश्य होकर रहती है। इस समय मेरा अंतरात्मा उत्प्रेरित है और मैं यह अशुभ समाचार देने को बाध्य हूँ कि सन् १९८२ की जुलाई विश्व के महाविनाश के दृश्य लिये दौड़ी चली आ रही है। उस समय दो महाशक्तियों के मध्य कुल ११ मिनट का ऐसा वीभत्स परमाणु युद्ध होगा, जिसमें छहों महाद्वीपों के कुल ७० हजार व्यक्ति जीवित बचेंगे। इस महाप्रलय की विभीषिका को देखने के लिए मैं तो जीवित नहीं रहूँगा, किंतु संसार उसके लिए अभी से तैयार रहे।

भविष्य में क्या होगा ? उसकी सत्यता तो समय बताएगा, पर वस्तुतः अब जो स्थितियाँ हैं, वे अपने आप में एक बहुत बुरी खबर है, मानवीय जीवन में व्याप्त आस्था संकट, नैतिक और सामाजिक मर्यादाओं का उल्लंघन राजनैतिक दर्प, जनसंख्या की बाढ़, खाद्य संकट, मुद्रा स्फीति और परमाणु अस्त्रों का अंधाधुंध निर्माण ही इस बुरी खबर को सत्य सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है। होने वाला तो इससे भी भयंकर है, तब जबकि मनुष्य अपनी जीवन दृष्टि बदलने को तैयार नहीं होगा।

❐ ❐

मुद्रक: युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा